:: अध्याय - तीसरा ::

भगवतीचरण वर्माजी की कहानियों में प्रतिबिंबित समाज जीवन ।

(1) उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग ।

(2) वर्ग - संघर्ष ।

(3) नारी के चित्रण ।

(4) धर्म, अंध-श्रद्धा, रूढ़ी-परम्परा,
जाति व्यवस्था ।

(5) पति-पत्नी का रिश्ता, नवयुवक और
बुजुर्गों की आदतें ..... [illegible]

(6) वर्तमान युग में स्वार्थों का बढ़ता महत्व
और बदलते नीतिमूल्य ।

:: अध्याय तीसरा ::

भगवतीचरण वर्माजी की कहानियों में प्रतिबिंबित समाज जीवन

भगवतीचरण वर्मा कथाकार के रूप में तत्कालिन समाज का वास्तविक चित्रण करने वाले लेखक हैं। समाज का वास्तविक चित्रण करते समय उन्होंने कभी हास्य व्यंग्य का आधार लिया है तो कभी वे विशुध्द चिन्तक बनकर उपस्थित हुए हैं। समाज में दिखाई देनेवाले उच्च वर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग को स्वभाविकता से उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी कहानियों में मध्यम वर्ग अधिक मुखरित होता दिखाई देता है। उन्होंने कहानियाँ अधिक नहीं लिखी हैं और उनकी कहानियाँ का क्षेत्र भी सीमीत है। अपनी कहानियाँ में उन्होंने शहर में रहनेवाले केवल बुध्दिजीवी वर्ग के रहन-सहन, पोषाख, तत्कालिन समाज में दिखाई देनेवाले विभिन्न वर्ग-संघर्ष, धर्माडम्बर, अंधश्रध्दा, हिन्दू संस्कृति के नितीमूल्य, उन मूल्यों का पालन करनेवाली आदर्श भारतीय नारी, पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता से प्रभावित नारी और अन्य छोटी-मोटी बातों का सूक्ष्म चित्रण किया है। ग्रामीण जीवन का चित्रण उनकी कहानियों में विशेष रूप से नहीं मिलता लेकिन कुछ कहानियों में कृषक, मजदूर, जमींदार और निम्न वर्ग की झाँकियाँ दिखाई देती हैं।

।1। समाज में दिखाई देनेवाले विभिन्न वर्गों का चित्रण

।1।।3। :- उच्च वर्ग :-

।3।।1। :- उच्च वर्गीय लोगों की स्वार्थी वृत्ति का चित्रण

समाज में अमीर वर्ग के कुछ लोग इतने स्वार्थी होते हैं कि उन्हें अपने सिवाय अन्य वर्गों के लोगों से कोई मतलब ही नहीं रहता। वे बस अपनी ही रोटीपर घी उँडेल लेने के मतलब से अपने सारे कार्य करते रहते हैं। ऐसा करते समय दूसरों पर क्या बीतेगी इसका वे तनिक भी विचार नहीं करते। ऐसे कुछ अमीर लोगों में दिखाई देनेवाली स्वार्थी वृत्ति का चित्रण भगवतीबाबू की निम्नलिखित कहानियों में मिलता है।

" अर्थपिशाच"

"आधुनिक युग में अर्थ प्रधान मनोवृत्ति के प्रभाव में आकर जो लोग मानवोचित

गुणों से शून्य होकर पिशाच जैसा व्यवहार करने लगते हैं, अर्थात सारी नैतिकता, संयम और सामाजिक दायित्व की भावना को भूलकर रात-दिन धन बटोरने में जुटे रहते हैं चाहे इस के कितने ही लोगों के स्वास्थ्य, चरित्र, धन, सम्मान या प्राणोंतक की हानी हो जाए, उन्हें अर्थपिशाच कहा जाता है।" ।1।

इस कहानी का नायक जो मरणोन्मुख वृध्द और कराड़पति है, ऐसा ही अर्थपिशाच है। पैसा ही उसके लिए साध्य और साधन है। उसकी मनोवृत्ति से उसकी स्वार्थान्धता स्पष्ट दिखाई देती है। मरणोन्मुख अवस्था में भी वह धन के उपभोग के लिए जिने की लालसा रखता है। वह डाक्टर से अपनी जिन्दगी की भीख माँगता है और बदले में अपनी आधी सम्पत्ति उन्हें देने के लिए तैयार हो जाता है। जीवन का अन्तिम समय समीप आनेपर भी सम्पत्ति के बलपर अपने आप को सर्वश्रेष्ठ शक्तिमान समझता है। उसने यह धन गरीबों को लूटकर स्वार्थी वृत्ति से कमाया है। उसकी क्रूर वृत्ति और स्वार्थांधता निम्नांकित कथन से स्पष्ट होती है।—

" नहीं मैं तुम्हारी सम्पत्ति वापास नहीं कर सकता। वह मेरी सम्पत्ति है कानून से मेरी है। तुम कहते हो मैंने धोखा दिया है, पर तुमने धोखा खाया क्यों? तुम बेवकूफ हो मैं अकलमन्द, तुम निर्बल हो मै सबल। तुम न्याय चाहते हो, अदालत जाओ। तुम दया चाहते हो, भगवान से प्रार्थना करो। तुम इस दुनिया में रहने के लायक नहीं हो? जाओ आत्महत्या कर लो।" ।2।

जब वह करोड़पति मर जाता हैं तो तुरन्त उसके पलंग से एक काला साँप निकलता है और जहाँ सोने की इटों का अम्बार लगा हुआ था, उसी सेफ में जा छिपता है। इसी के साथ वृध्द के सिरपर जो घृणित छाया मँडरा रही थी वह भी लुप्त हो जाती है। इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि, धन के लालची मरने के बाद भी धन की अभिलाषा नहीं छोड़ते।

"रूपया तुम्हे खा गया"

समाज में दिखाई देनेवाली अर्थलिप्सा पर यहाँ कठोर प्रहार किया है। कहानी का नायक "सेठ मानिकचन्द" चोरी के रूपयों से अमीर बन जाता है और

।1। ओमप्रकाश गाबा - सं.मिमूलक शब्दकोष - पृ. 15, बी.आर.पब्लीशिंग कारपोरेशन, दिल्ली-110 052 - प्रकाशन वर्ष-1986

।2। भगवतीचरण वर्मा - इन्स्टालमेन्ट - पृ. 16

फिर रुपया ही उसके जीवन का मकसद बन जाता है। उसके बच्चे उसका प्यार प्राप्त करने के लिए तरस जाते हैं। लेकिन वह पागल की तरह पैसे का पीछा नहीं छोड़ता। न अपने बीमारी की परवाह करता है और न अपने पत्नी और बच्चों की ओर ध्यान देता है। नतिजा यह होता है कि, उसकी पत्नी और बच्चे भी उसीकी राहपर चलने लगते हैं। जब वह बीमार हो जाता है तब वे उसकी बीमारी से अधिक ध्यान उसकी तिजोरी पर रखने लगते हैं। यह देखकर वह पागल हो जाता है, लेकिन पागल होने से पहले जीवन के इस कटू सत्य को अनुभव करता है। उसे रुपयों के पीछे भागने की अपनी भूल का अहसास होता है।

"कुँवर साहब का कुत्ता"

इस कहानी के नायक "कुँवर साहब" उपर से तो बहुत दयालू दिखाई देते हैं, लेकिन अंदर से क्रूर, निर्दयी हैं। उनकी दयालू वृत्ति अपने तक ही सीमित है। तरह-तरह के कुत्तों को पालना और मेहमानों की खातिरदारी करना, उनको खिलाना -पिलांना आदि उनके शौक हैं। निम्नवर्गीय लोगों के प्रति उनके मन में दया नाम की चीज बिल्कुल दिखाई नहीं देती बल्कि उनके साथ वे क्रूरता से पेश आते हैं। यह बात निम्नलिखित घटना से स्पष्ट हो जाती है।

"एक दिन मैकू धोबी का गधा और कुँवर साहब का कुत्ता इन दोनों में झगड़ा शुरू हो जाता है और गधे की लात से कुत्ता मर जाता है। जब यह बात कुँवर साहब को मालूम हो जाती है तब बिना सोचे समझे, मैकू की गरीब परिस्थिति और उसकी रोजी रोटी की परवाह न करते हुए गधे को गोली से मार देते हैं। वे अपने कुत्तो को स्वाभिभक्त और ईमारदार समझते हैं और गरीब इन्सान को स्वार्थी, नमक हराम कहते हैं। उनके मेहमान भी बिल्कुल उन्हीं की तरह दिखाई देते हैं। एक बार संध्या के समय चाय पीने के बाद उनके घर आये हुए सब मेहमान गपशप करने बैठते हैं, तो वे अपने किस्से सुनवाते हैं, जिनमें उनकी निर्दयी वृत्ति के दर्शन होते हैं। उनमें से एक मेहमान बताते हैं कि, एक दिन नशे में चूर होकर उन्होंने खिदमतगार को पीटा, जब वह खिदमतगार रपट लिखवाने के लिए थाना जाने लगा, तो उसे धमकाते हुए उन्होंने कहा--

"अगर थाने पहुँचने की इत्तिला मुझे मिली तो खाल खिंचवा लूँगा।" ।1।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" पृ. 48

वे अपने खिदमतगार को नमकहराम कहते हैं और अपने कृत्य का समर्थन वे निम्नलिखित कथन से करते हैं:-

" और जनाब ज्यादा पी जाने के बाद मैंने अपने खिदमतगार को गुस्से में कुछ मार दिया। कोई तलवार बन्दूक तो मारी ही न थी, केवल हाथ से मारा था लेकिन वह साला मरियल खिदमतगार, मेरी मार बरदाश्त न कर सका, और उसे कुछ चोट आ गई। अब जनाब उस साले का मैंने इलाज करवाया।"

" अब जरा गौर करें कि मेरा खिदमतगार पुश्त-दर-पुश्त से मेरे नमक पर पला था। अगर मैंने उसे थोडा सा मार ही दिया, और वह भी जब मैं कुछ ज्यादा पी गया था, तो क्या उसे थाने की बात सोचनी चाहिए? लेकिन क्या किया जाय, नमक-हरामी तो इन्सान की नस-नस में भरी है" [1]

दूसरे मेहमान अपने बेगारी की नमकहरामी का किस्सा सुनाते हुए कहते हैं कि, एक बार उनके इलाकें में कमिश्नर साहब आये हुए थे, उनकी खातिरदारी में वे दिनभर बेगारों को अनाज देना भूल गये थे। तब एक बेकारी ने कमिश्नर साहब से बेगारी न मिलने की शिकायत की। कमिश्नर साहब भी सुनी-अनसुनी करके चले गये। उनके चले जाने के बाद उन्होंने उस बेकारी को इतना पीटा कि , बेचारेको पन्द्रह दिन तक चारपाई पर पड़ा रहना पड़ा और बाद में उसे नौकरी से भी निकाल दिया गया। इतनी निर्दयता दिखाने पर भी वे कहते हैं-

"अब आप ही समझिये कि अगर एक दिन बेगारियों को चबेना नहीं मिला तो वह मर न जाते और फिर कमिश्नर साहब कीखातिरदारी की वजह से चबेना देना भूले थे।" [2]

अन्त में उस बेगारी कें बारे में कहते हैं कि,

"अब भीख माँगता होगा, लेकिन मुझे तो यह बतलाना था की इन्सान कितना नमक हराम होता है" [3]

यहाँ कहानीकार ने अमीर लोगों की निर्दयी वृत्ति को और गरीब लोगों

---

[1] भगवतीचरण वर्मा - "दो बाँके" पृ. 48
[2] --"-- वही --"-- पृ. 49
[3] --"-- वही --"-- पृ. 49

की दुर्बलता को दिखाया है। इसके साथ ही सरकारी अधिकारी भी अपने स्वार्थ के लिए किस तरह अमीरों का साथ देते हैं, इसकी ओर भी कमिश्नर के माध्यम से संकेत किया है।

"कुँवर साहब मर गये"

प्रस्तुत कहानी में स्वतंत्रतापूर्व भारतीय समाज के रईस उच्चवर्गीय लोगों की मनोवृत्तियाँ, देशबांधवों के प्रति उनकी भावनाएँ, तत्कालिन राजनीतिक आन्दोलन और इस आन्दोलन के प्रति अंग्रेज सरकार का विरोध, तथा उनकी कुटील नीति आदि का चित्रण मिलता है। कहानी के नायक "कुँवर कमलनारायण" एक अमीर, शराबी अय्याशी भारतीय आदमी हैं। एक दिन घर में शराब खत्म हो जाने के कारण वे गाड़ी में बैठकर निकलते हैं, ताकि दुकानपर शराब खरिदकर वहीं पिये। रास्ते में जाते समय कांग्रेस का जलूस और कप्तान व्दारा कांग्रेस स्वयंसेवकों की पीटाई देखते हैं तो कप्तान साहब से पीटाई रोकने के लिए कहते हैं। कप्तान नया होने के कारण कुँवरसाहब जैसे रईस आदमी को पहचानता नहीं और कड़ा जबाब देता है। कुँवरसाहब को ये अपना अपमान महसूस होता है और वे जोश में आकर "भारत माता की जय"!! महात्मा गांधी की जय! के नारे लगाते हैं। कप्तानसाहब क्रोधित होकर उन्हें गिरफ्तार कर लेते हैं और थाना ले जाते हैं। थाने में कोतवाल साहब उन्हें पहचानते हैं। उनका गुस्सा शान्त करने के लिए उन्हें शराब लाकर देते हैं और बताते हैं कि,कांग्रेसवाले आज पीट न जाते तो सिविल लाईन्स की शराब की दुकानोंपर भी धरना करते। कोतवाल साहब के इस कथन से वे अपनी कांग्रेस स्वयंसेवको की पीटाई रोकने की भूल स्वीकार करते हैं। बाद में उन्हें बाईज्जत घर पहुँचाया जाता है। दूसरे दिन जब कांग्रेस के लोग बड़ी उत्सुकता से कुँवर कमल नारायण के बँगलेपर मिलने जाते हैं, तब कुँवर साहब बँगले के बरामदे में बैठे होते हैं, उनके सामने शराब से भरा प्याला होता है और उनकी नजर बगीचे में काम कर रही जवान मालिन पर होती है। कांग्रेस वालों को देखकर वे कहते हैं :-

" अबे ओ... कलुआ, देख तो इन खद्दर-पोशों को किसने बँगले में घुस आने दिया, इनसे कह दे कि कुँवर साहब मर गये।"[1]

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" पृ.42

यहाँ कथाकार ने स्वतंत्रतापूर्व भारत में अपने में ही मस्त रहने की अमीर लोगों की प्रवृत्ति को उजागर किया है।

"नाजिर मुंशी"

जब आदमी के पास अधिक पैसा नहीं होता तब वह रिश्तेदारों, नौकरों तथा अन्य लोगों के साथ जिस प्रेम से बर्ताव करता है वह प्रेम जब उसके पास अधिक पैसा हो जाता है तब नहीं रहता। इस कहानी के पात्र "डिप्टी साहब" से यह बात स्पष्ट हो जाती है। डिप्टी साहब शुरु में एक अच्छे आदमी हैं। वे अपने गरीब रिश्तेदारों से बड़ी आत्मीयता से पेश आते हैं। उनके बहनोई के भाई नाजिर मुंशी एक गरीब आदमी होते हुए भी वे उनसे बराबरी का व्यवहार करते हैं। घरमें उनका बड़ा ही मान-सम्मान होता है। जब डिप्टी साहब के बेटे की शादी होती है तब शादी में उमीर-गरीब सब प्रकार के मेहमान आते हैं। डिप्टीसाहब उन सब को अपने बराबरी के तथा अपनीही तरह इज्जतदार समझते हैं।

लेकिन पचिस साल बाद जब वे लखपति बन जाते हैं तब उनके स्वभाव में काफी परिवर्तन हो जाता है। उनके इर्द-गिर्द उच्चपदस्थ अमीर रिश्तेदारों की भीड़ जमने लगती है। इन अमीर लोगों में हीवे गुम हो जाते हैं। नाजिर मुंशी का स्थान अब उनके घर में न के बराबर हो जाता है डिप्टीसाहब और उनके घरवाले उनसे नौकरों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। नाजिर मुंशी कितनी ही बार उनके काम आये हैं पर किसी कोउनके अहसानों की याद नहीं रहती।

"बेकारी का अभिशाप"

इस कहानी में अमीरों की अहसान फरामोश वृत्ति की झाँकी दिखाई है। कहानी का नायक 'ललितमोहन' बहुत ही कठिन परिस्थितियों से घीर जाने के कारण अपने एक सम्पन्न रिश्तेदार के पास जाकर अपने लिए नौकरी का प्रबंध करने की बिनती करता है। उस रिश्तेदार को ललित मोहन के पिताजीने ही पढ़ा-लिखाकर नौकरी दिलवाई थी। और उसकी जिन्दगी सँवार दी थी। फिर भी वह रुखे स्वर में अपनी असमर्थता बताकर कुछ मदद नहीं करता। इन बातों से यह स्पष्ट होता है कि कुछ लोग अमीर बनने के बाद गरीबी में काम आये अपने रिश्तेदारों को भुला देते हैं।

उच्चवर्गीय लोगों की अय्याशी वृत्ति का चित्रण :-

उच्चवर्गीय लोगों की अय्याशी वृत्ति का चित्रण:-

"दिल का दौरा"

कहानी के मुख्य पात्र 'गौर मोहन ज्ञानी' परिवहन विभाग के सचिव हैं। उपर से बहुत ही शरीफ इन्सान लगते है लेकिन एक नम्बर के अय्याश प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं, जिन्हें नैतिक मूल्यों के प्रति जरा भी आस्था नहीं हैं। कहानीकार ने उनके बारेमें अधिक जानकारी निम्नलिखित प्रकार से दी है।

"गम्भीर और प्रभावशाली व्यक्तित्व व नपे-तुले और तर्कसंगत शब्द, चीजों को तत्काल देखने और समझ सकने की क्षमता। सही को गलत और गलत को सही साबित करने की दक्षता, किसी के आगे न झुकने और किसी से न दबनेवाला आत्मविश्वास से भरा अहम। श्री गौरमोहन ज्ञानी अपने जीवन में सफल व्यक्ति कहे जा सकते हैं, यदि सफलता शब्द की परिभाषा में सड़ी-गली नैतिकता की दुहाई निकाल दी जाय। जहाँ तक नैतिकता शब्द का प्रश्न है, वह धर्म के साथ जुड़ा हुआ है और गौरमोहन ज्ञानी की धर्म पर आस्था पर किसी को शंका नहीं हो सकती। नित्य शाम के समय ऑफिस से लौटने के बाद वह स्नान करते और गर्मी में रेशमी तथा जाड़ों में उनी परिधान पहनकर पूरे दो घण्टे विष्णू भगवान के राम और कृष्ण के रूपों की पूजा करते थे। पूजा करने के अर्थ होते हैं :-

"भगवान से अपने पापों को क्षमा कराना। लेकिन अगर पाप ही न हो तो भगवान क्षमा क्या करेंगे। इसलिए सात-आठ बजे के बाद वह पाप-पुण्य का विचार ही छोड़ देते थे।" [1]

अत: ज्ञानीजी का पूजा पाठ सीर्फ एक ढोंग है। उन्हें अपनी अय्याशी तथा वासना की पूर्ति के लिए शराब के साथ जवान लड़की की भी जरूरत रहती है। अपनी वासना , तृप्ति के लिए उन्हें नयी नयी लडकियों की तलाश रहती है। अक्षयवर त्रिपाठी उनके लिए मयुराक्षी बाला को ले आते हैं, तब ज्ञानीजी उनके कान में कहते हैं--

"उम्र कुछ ज्यादा है, महिना पन्द्रह दिन चल जायेगा। कोई नयी तलाश करना।" [2]

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" पृ. ।।।
[2] --"-- वहीं --"--

गौरमोहन ज्ञानी इतने नीच इन्सान हैं कि, अपने अधिकार तले काम करने वाले नौकरों की बिबीयों को भी वे अपनी वासना का शिकार बनाना चाहते हैं। शायद इसी कारण ज्ञानदेव अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ ज्ञानीजी के आशिर्वाद लेने नहीं आता। जब ज्ञानीजी उसके बारे में अक्षयवर से पूछते हैं तो वे कहते हैं -- उसकी पत्नी बीमार हो गयी इसलिए ज्ञानदेव उसे डाक्टर के यहाँ ले जा रहा था। यह सुनेकर ज्ञानीजी गरज उठते हैं--

"झूठ बोलता है हरामजादा।" ।।।

वे अपने नौकर रामदीन को दूसरी शादी करने के लिए उकसाते हैं। रामदीन अठारह बरस की सुन्दर ग्रामीण युवती दूर्गा से शादी कर लेता है, ज्ञानीजी जब दूर्गा को देखते हैं तो उसे सर से पांव तक निहारते हैं। उनकी कामुक नजर उसे यौवन और सौन्दर्य पर ठिठक जाती है। वे दूर्गा को अच्छी साडीयाँ खरिदने के लिए पैसे देते हैं, और रामदीन को सिनिमा देखने के लिए रात छुट्टी देते हैं। रामदीन के जाने के बाद दूर्गा जब उनके कमरे की सफाई करने के लिए आती है, तब ज्ञानीजी उसे अपनी हवस का शिकार बनाने की कोशिश करते हैं। यह बात अलग है कि वे इसमें नाकामयाब रहते हैं।

उच्चवर्गीय लोग अपने अधिकार और रूपये के मद में नीति-मूल्यों की परवाह नहीं करते, नहीं गरीब इन्सानों की भावनाओं की कदर करते हैं। गरीबों की इज्जत से खेलना मानो उनका अधिकार ही है। उच्च वर्गीय लोगों की इस विकृत वृत्ति के दर्शन लेखक ने गौरमोहन ज्ञानी के माध्यम से कराये हैं।

बहुतसी कहानियों में लेखक ने यद्यपि उच्चवर्गीय लोगोंकी निर्दयता, अमानुषता अनैतिकता तथा गरीबों के प्रति उनकी अनुदारता का चित्रण किया है, परंतु उच्चवर्गीय लोगों में दिखाई देने वाली इन्सानियत और कोमलता को उन्होंने नजर अंदाज नहीं किया है। इसका उदाहरण "बाँय! एक पेग और" कहानी में मिलता है।

"बाँय! एक पेग और!"

कहानी का नायक "विश्वकान्त" एक अमीर बाप का बेटा है, जो एक

।।। भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" पृ. 110

गरीब लडकी माधवी से बहुत प्यार करता है। वह उसे दिल से चाहता है। उसके पिता को यह बात पसन्द नहीं है, फिर भी वह माधवी के साथ शादी करना चाहता है। शादी का दिन भी तय किया जाता है। लेकिन शादी के एक दिन पहले ही उसके पिता का तार आता है। तार में लिखा होता है कि, उनकी सब जायदाद निलाम हो चुकी है, जिसके कारण वे बहुतही अस्वस्थ हो गये हैं। पिता के धन की निलामी की बात से विश्वकान्त को तनिक भी दुःखनहीं होता। क्योंकि वह धन से अधिक और अपनी जान से भी अधिक प्यार माधवी से करता है। उसका असली धन प्यार माधवी केरूपमें उसे मिलनेवाला है। इसलिए वह बेहद खुश है। धन के निलामी की घटना भी उसकी खुशी को कम नहीं कर सकती। यह बात अपने नये मित्र किशन से सुनाते वक्त वह कहता है --

" उस तार को मैंने पढ़ा पर मेरे ऊपर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। असर होता कैसे? मेरे उपर तो प्रेम का पागलपन सवार था। संसार की सारी सम्पत्ति माधवी के आगे तुच्छ थी।" ।।।

पिता का तार मिलनेपर भी वह शादी की तारीख टालकर गाँव जाना नहीं चाहता, लेकिन माधवी उसे गाँव जाने के लिए मजबूर करती है। वह कहती हैं, तुम्हारे पिता अस्वस्थ हैं, बीमार हैं, उन के पास जाना तुम्हारा धर्म है। माधवी के इन विचारों से वह उसे देवी मानता है और गाँव चला जाता है। लेकिन वह भोला भाला युवक यह नहीं समझ पाता कि,उसके धन की निलामी की बात सुनकर माधवी के चेहरे का रंग उड़ गया है। वह उसे नहीं बल्कि उसके धन से प्यार करती है। विश्वकान्त के गाँव चले जाने के बाद वह तुरन्त उसे सहपाठी तथा एक बिगड़े हुए रईस के बेटे" 'निर्मलचन्द्र" शादी कर लेती है। गाँव से लौट आनेपर विश्वकान्त को यह बात मालूम हो जाती है, तो उसका दिल टूट जाता है। असल में धन की निलामी उसके पिता की सम्पत्ति की नहीं बल्कि निर्मलचंद्र के पिता की सम्पत्ती की हुई होती है, और वह सब सम्पत्ति विश्वकान्त के पिता खरीद लेते हैं। अपने पास अमाप सम्मत्ति होते हुए भी विश्वकान्त चाहकर भी माधवी को भूला नहीं पाता और अपने आप को शराब के नशे डुबो देता है। "विश्वकान्त" "उत्तरदायित्व" कहानी के जगदिश के तरह भाउक और कोमल - हृदयवाला दिखाईदेता है।

।।। भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" - पृ. ।।4

उच्चवर्गीय लोगों की खोखली स्थिति और झूठा अहंकार

कई बार ऐसा देखा जाता है कि,अमीर लोग अपनी बदलती परिस्थिती से समझौता नहीं कर पाते। अपनी कमजोर आर्थिकपरिस्थितियों में भी उसी ठाट से रहते हैं जिस तरह रहते आये हैं। अपनी खोखली स्थिति को भूलने के लिए अपने आप को शराब के नशे में डुबो देते हैं। इसका चित्रण निम्नलिखित कहानियों में मिलता है:-

"बॉय! एक पेग और"

इस कहानी के नायक "विश्वकान्त" का मित्र "निर्मलचन्द्र" एक बिगड़े हुए रईस का बेटा है। उसके पिता की जायदाद विश्वकान्त के पिता के पास गिरवी होने पर भी निर्मलचन्द्र के पास गाडी बंगला सबकुछ है। निर्मलचन्द्र, के पिता एक गैर जिम्मेदार और झूठे अहंकार की भावना से ग्रसित उच्चवर्गीय आदमी हैं। अपनी खोखली स्थिति में भी रईसी ठाट बाट से रहने के कारण एक दिन उनकी सब जायदाद निलाम हो जाती है। ऐसे रईस जानते हुए भी कि,वे मिट रहे हैं, अपने आप को बचा नहींपाते।

"विवशता"

इस कहानी का पात्र "रामकिशोर" एक गैरजिम्मेदार अमीर व्यक्ति है। जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिती कमजोर हो गयी है। फिर भी वे अपनी आदतों से बाज नहीं आते, न ही अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं। अधिकरुपया कमाने के लिए घुडदौड़ लगाते हैं। और हारने के बाद अपने आपको शराब के नशे में डुबो देते हैं। अपनी गलतियों का अहसास होते हुए भी वे अपने आप को सँभल नहीं पाते। इन गलतियों के लिए वे अपनी पत्नी से माफी भी माँगते हैं। वे दिल से बहुत ही अच्छे आदमी हैं। अपनी पत्नी के बचपन के दोस्त रमेश के आनेपर उसकी अच्छी तरह मेहमान नवाजी करते हैं। उसे सिनेमा दिखाते हैं। अपने ड्राईवर से रमेश को शहर घुमा लाने के लिए कहते हैं।

अपनी गैरजिम्मेदारी के कारण रामकिशोर एक वारन्ट से गिरफ्तार कर लिए जाते हैं। उन्हें छुडाने के लिए दो सौ रूपयों की आवश्यकता होती है। लेकिन

घर की हालत इतनी दयनीय हो गयी है कि घर में कुछ भी नहीं है। जेवर, बर्तन सब बीक चुके हैं। अतः उनकी पत्नी को दो सौ रुपये के लिए मजबूर होकर चोरी करनी पड़ती है।

उच्च वर्गीय लोगों में दिखाई देनेवाली झूठी शान

"संकट"

तााल्लुकेदार, जमींदार सिर्फ नाम के जमींदार या ताालुक्ककेदार रहनेपर भी अपने बड़प्पन को तथा शान को बरकरार रखने का प्रयत्न करते हैं। जब कोई उनकी शान को ललकारता है, तब अपनी शान कीखातिर वे कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इस कहानी के पात्र "लाल रत्नाकरसिंह" सिर्फ नाम के ताल्लुकेदार हैं। उनके पिता पृथ्वीलालसिंह लखनऊ जिले में आदिमपुर गाँव के छोटेसे तालुकेदार थे, लेकिन लाल रत्नाकरसिंह की स्थिति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है।

एक दिन शाम के वक्त आदिमपुर गाँव के मान्यवर व्यक्तियों की जैसे थानेदार ठाकुर घमण्डीसिंह, ग्रामप्रधान श्री शिवराम यादव, पोस्टमास्टर संकटाप्रसाद श्रीवास्तव स्कूल के हेडमास्टर पंडित कमलनाथ शर्मा, महाजन लाला अशर्फीलाल और खुद ताल्लुकेदार रत्नाकरसिंह आदि लोगों की महफील जमी है। गपशप के दौरान रत्नाकरसिंह बताते हैं कि,उनके लड़के का मुँडन संस्कार करना है। वह स्वयं चाहते हैं कि,सीधे,सादे तरीके से यह संस्कार हो जाय, लेकिन उनकीपत्नी ठकुराईन धूम धाम से यह संस्कार करना चाहती है। इस बात पर ठाकुर घमण्डीसिंह ठकुराईन साहिबा की पुरानी आन-बान, ऊँची रहनसहन, ऊँची सोच, ऊँची बात की सराहना करते हैं। जो रत्नाकरसिंह ठाट बाट से मुँडन संस्कार करने को पत्नी की इच्छापर उसे गालियाँ देते हैं, अब घमण्डीसिंह के मुख से पत्नी कीप्रशंसा सुनकर उनकी बड़प्पन की भावना जागृत होती है। वे अकड़ और घमण्ड के साथ कहते हैं:-

"तो हमें का तुम ओछा आदमी समझ रखे हो? होय साला, मुँडन ठाट-बाट के साथ। और वह घुमरी की ओर घुमे- सौ निकासौ सरऊ साईत। लेकिन इन्तजाम के लिए हुई एक महिना चाही।"[1]

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" - पृ.36

रत्नाकरसिंह घमण्डीसिंह की बातों में आकर अपनी बात तुरन्त बदल देते हैं और धूम धाम से बच्चे का मुंडन संस्कार करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

"क्षमायाचना"

प्रस्तुत कहानी के पात्र "रविप्रकाश" लखनऊ में सरकारी अफसर हैं। स्वयं ठाट-बाट में रहते हैं। वे झूठी प्रतिष्ठा के शिकार दिखाई देते हैं। उनका बेटा ज्ञानप्रकाश बम्बई में एक कमरे में रहता है, यह उन्हें शर्म की बात महसूस होती है। उसके बारे में अपनी बहू से वे कहते हैं--

"यह ज्ञान तो हम लोगों की नाक कटा रहा है, इस मकान में रहकर। तुम लोग अपने लिए एक स्वतंत्र फ्लैट क्यों नहीं ले लेते हो कहीं?" ।1।

ज्ञानप्रकाश बताता है कि, वह दो कमरे का फ्लैट खरीदनेवाला है और उसके लिए उसे लोन भी मिलनेवाला है। रविप्रकाश तीन कमरोंका फ्लैट लेने का हुक्म अपने बेटे को देते हैं। उनके खयाल में दो कमरों का फ्लैट एकदम ही बेकार है, क्योंकि अगर बाहरसे कुछ मेहमान आये तो वे कहाँ रहेंगे? चार न सही तीन कमरोंका फ्लैट तो होना ही चाहिए। वे ज्ञानप्रकाश को फ्लैट बुक कराने के लिए बीस हजार का चेक देना चाहते हैं। ज्ञानप्रकाश पिता के आत्मसम्मान को ठेस न पहुँचे इसलिए पत्नी सुषमा के कहनेपर दस हजार का चेक लेने के लिए तैयार हो जाता है।

ज्ञानप्रकाश केखयाल में एक परिवार के लिए तीन कमरे के फ्लैट की जरूरत ही नहीं है। इसलिए आखिर में वह दो ही कमरे का फ्लैट खरीदता है।

रविप्रकाश एक इमानदार सरकारी अफसर हैं, जिनमें उदारता, सुरुची तथा कला के प्रति लगाव दिखाई देता है। इसी कारण उन्हें बम्बई में सहकारिता पर होरही एक अन्तरराष्ट्रीय गोष्ठी के लिए के लिए विशेष आग्रह के साथ आमंत्रित किया जाता है। उनके साथ सहकारिता के राज्यमंत्रि श्री लोटन पाण्डे और रजिस्टार सोहनलाल चोरासिया भी होते हैं। उन सबको ठहरने की व्यवस्था एक अच्छे होटल में होते हुए भी रविप्रकाश उन दोनों को अपने साथ अपने बेटे के फ्लैट में ठहराना चाहते हैं। बेटे की शान-शौकत का बखान उन दोनों के सामने करते हैं। ज्ञानप्रकाश अपने पिता से कहता है फिलहाल उन दोनों को होटल चलने दीजिए और आप अकेले घर चलिए।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी - पृ.21

घर आने पर ज्ञानप्रकाश का दो कमरे का फ्लैट देखकर वे आग बबूला हो जाते हैं और कहते हैं :-

"तुमने तो मेरी नाक कटा दी...। वह मेरे साथी क्या सोचते होंगे? मैं तो उन्हें खाना खाने भी नहीं बुला सकता। मुझे नहीं मालूम था कि मेरा लड़का इतना कमीना और तुच्छ निकलेगा। कुलकलंक कहीं का।" [1]

पिता की इतनी कड़वी बातें सुनने के बाद ज्ञानप्रकाश तुरन्त उनका दस हजार का चेक वापास लौटा देता है और कहता है:-

"जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे अपनी जिन्दगी अपने ढंग से जीने का पूरा अधिकार है। मैं साफसाफ कह दूँ कि झूठी शान-शौकत पर मुझे जरा भी विश्वास नहीं है।" [2]

रविप्रकाश अपने क्रोध को रोक नहीं पाते और बेटे का मुँह कभी न देखने की कसम खाकर उसी वक्त अपना असबाब लेकर होटल चले जाते हैं।

यहाँ रविप्रकाश झूठी शान-शौकत के कायल दिखाई देते हैं। तो उनका बेटा ज्ञानप्रकाश इसमें जरा भी विश्वास नहीं रखता। जिस चीज की जरूरत नहीं है सिर्फ दिखावे की भावनासे करने के लिए तैयार नहीं होता। वह इतना खुद्दार है कि, अपने पिता से भी मदद लेने से कतराता है। रविप्रकाश और ज्ञानप्रकाश के रूप में वर्माजी ने उच्च वर्ग के दो व्यक्तित्व सामने लाये हैं।

" ____ :- अत: भगवतीबाबू ने समाज में व्याप्त उच्च वर्गीय लोगों की स्वार्थी, निर्दयी वृत्ति, गरीबों के प्रति उनमें दिखाई देनेवाली अनुदारता और क्रूरता अपनी आन-बान और शानपर मर मिटने की वृत्ति, तथा बदलती परिस्थिती के साथ समझौता करने में उनकी असमर्थता साथ ही साथ उनमें दिखाई देनेवाली इन्सानियत और कोमल भावनाओं का चित्रण अपनी उपर्युक्त कहानियों में यथार्थता से किया है।

मध्यमवर्ग

उच्च वर्ग की तरह मध्यम वर्ग का चित्रण भी हमें वर्माजी की कहानियों में

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी"- पृ.26
[2] --"-- वही --"-- पृ.26

मिलता है। मध्यम वर्ग की कठिनाईयाँ और अभावग्रस्त जीवन का समग्र चित्रण उन्होंने अपनी निम्नलिखित कहानियों में किया है।

"बेकारी का अभिशाप"

इस कहानी के नायक "ललित मोहन" के पिता मध्यम वर्गीय आदमी थे। जो सेक्रेटरियट में तीन सौ रुपये वेतन पाते थे। उन्हें ठाट बाट से रहने की आदत थी। जितना कमाते थे सब खर्च कर देते थे। अपने चारों लड़कोंको उन्होंने अच्छी शिक्षा दी और अपने साथ लडकों में भी अच्छा खाने और पहनने की आदतें डाल रखी थीं। भविष्य के लिए रुपया बचाकर रखने के बारे में उन्होंने कभी विश्वास ही नहीं किया। इसी कारण जब उनकी अचानक मृत्यु हुई तब उनका परिवार ध्वस्त हो गया। उनका बड़ा लडका "राममोहन" अपने पिता की मौत की खबर पाकर तुरन्त कानपुर से प्रयाग चला आया। उसकी मिल के मैनेजर ने उसे बिना आज्ञा प्रयाग चले जाने के कारण नौकरी से बरखास्त कर दिया। बहुत दौड़ धूप के बावजूद उसे फिर नौकरी नहीं मिली। चारों भाई नौकरी पाने के लिए बहुत कोशिश करने के बावजूद भी नाकामयाब रहे। धीरे धीरे घर की स्थिति बिगड़ती गयी। घर की स्त्रियों के गहने यहाँतक कि, बर्तन भी बिकने लगे। घर की दयनीय बनती जा रही स्थिति को देखकर बड़े भाई राममोहन का साहस टूट गया। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया और उन्हें तपेदिक हो गया। रुपयों के अभाव में उनका इलाज करना भी मुश्किल हो गया। बड़े भाई की बीमारी, घर की दयनीय स्थिति और अपनी बेकारी से तंग आकर दूसरे भाई श्याम मोहन ने आत्महत्या करली। इन सब बातों का सदमा पहुँचकर तीसरा भाई कृष्ण मोहन पागल हो गया। घर की जिम्मेदारी अकेले ललित मोहन पर आ पड़ी। परिस्थिति से विवश होकर उसने अपने एक रिश्तेदार की लड़की की शादी में गहनों की चोरी की और वह पकड़ा गया।

ललित मोहन जेल के दूसरे दो कैदी तिवारी और गुप्ता को अपनी दास्तान सुनाते हुए कहता है--

"बाबूजी ने आप जानते हैं हम लोगों के लिए क्या छोड़ा निर्धनता, झूठा अभिमान और समाज की भयानकता। हम लोग मध्यम समाज के थे, रहन-सहनमें तो हम लोग ऊँचे समाज के थे। हम लोग शिक्षित भी थे और हमारे सामने थी बेकारी। चुप रह कर भूखों मरना और उफ न करना।"।1।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट"- पृ.30

"बरतन भी धीरे धीरे समाप्त होने लगे। बड़े भाईसाहब को डाक्टरोंने जवाब दे दिया। कृष्ण मोहन को पागलखाने भेज दिया गया था। माताजी और दोनों भावजें सुखकर काँटा हो गयी थीं। हम लोग कंगालो से भी गये बीते थे।" [1]

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि, कुछ मध्यम वर्गीय लोगों में बड़े ठाट बाट से रहने की आदत होती है, जिसके कारण वे जितना कमाते हैं सारा खर्च कर डालते हैं। भविष्य के लिए धन बचाकर रखने में वे विश्वास नहीं करते।

इसी कारण कभी कभी भविष्य में अनिवासी कठिनाईयों का सामना करने की उनमें ताकद नहीं रह पाती, वे टूट जाते हैं। मध्यमवर्गीयों में शिक्षा के प्रति गहरी आस्था होती है और इसी के बलपर वे अपने भविष्य को छोड़ देते हैं। लेकिन कभी-कभी उच्च शिक्षित होने के बावजूद सिफारिश के अभाव में नौकरी नहीं मिलती और वे दो वक्त की रोटी के लिए मोहताज हो जाते हैं। इन सब बातों की वजह से बनी मध्यम-वर्गीय परिवार की शोचनीय स्थिति का चित्रण कथाकार ने यहाँ किया है।

"मेज की तसवीर"

कहानी में लेखक ने मध्यम वर्ग की अभावग्रस्तता और असमर्थता का चित्रण बहुतही सीधी सादी घटना व्दारा किया है। नायक "रामनारायण" एक लेखक है, जो मनोरमा से प्यार करता है, लेकिन मनोरमा धन के लालच में अमीर व्यक्ति से शादी कर लेती है। रामनारायण भी विवाह कर लेता है। लेकिन वह अपनी प्रियतमा मनोरमा को भूला नहीं पाता। उसकी तसवीर रामनारायण हमेशा अपने मेजपर रखता है। एक दिन उसे मनोरमा की इतनी याद आती है कि, उसे मिलने की चाहत उसके मन में जगती हैं। वह अगले ही दिन मनोरमा से मिलने कानपुर जाने का निश्चय कर लेता है। फिर सोचता है, प्रयाग से कानपुर जाने के लिए कितने रुपये लगेंगे? जब उसे मालूम होता है कि, दस रुपये लगेंगे तो उसकी सारी मुस्कुराहट लोप हो जाती है। वह सोचने लगता है:-

"दस रुपये! एक कहानी लिखने से इतना मिल जायेगा। पर अभी अभी मकान का किराया नहीं दिया है, पत्नी बीमार है, और खाने का सामान खत्म होने को आया है। इन सब का प्रयत्न! उफ जीवन में रुपया कितना भयानक है, और मनुष्य कितना विवश है! प्रत्येक पगपर वह अपनी विवशता अनुभव करता है, मैं कितना विवश हूँ।" [2]

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट"- पृ.33

[2] भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 15-16

मध्यम वर्गीय आदमी अपनी छोटीसी मुराद भी पुरी नहीं कर सकता। उसे हर पग पर सोचना पड़ता है। रूपयों की कमी के कारण वह अभावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है और स्वेच्छापूर्वक कुछ भी कर सकने में असमर्थ बन जाता है।

"नाजिर मुंशी"

इस कहानी में लेखक ने रूपये के कारण हुई मध्यमवर्गीय व्यक्ति की विवशता दयनीयता, और जीवन की कटुता का चित्रण किया है। इस के नायक "नाजिर मुंशी" एक मध्यमवर्गीय साधारण व्यक्ति हैं। वे विनोदप्रिय और हँसमुख हैं। वे इस कहानी के एक पात्र डिप्टीसाहब के बहनोई के भाई हैं। डिप्टीसाहब के घर में उनका बहुत मान-सम्मान होता है। डिप्टी साहब का हर काम वे अपना समझ कर करते हैं। लेकिन कुछ बरसों बाद डिप्टी साहब लखपति बन जाते हैं और उनकी वृत्ति बदल जाती है। उनके घर में अब नाजिर मुंशी को पहले जैसा मान-सम्मान नहीं मिलता बल्कि नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता है। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण नाजिर मुंशी इस बात के आदि हो जाते हैं। उनका विनोदप्रिय स्वभाव और हँसमुख वृत्ति लुप्त हो जाती है। किसी के कहने पर वह कोई किस्सा या विनोद सुना भी देते हैं, तो इस तरह कि, मानो यह उनका कर्तव्य हो, लेकिन उसमें उनका स्वयं का कोई उल्लास या भावना नहीं होती। डिप्टी साहब और उनके घरवालों के बदले हुए व्यवहार के कारण उनमें एक प्रकार की नीचेपन की भावना का जन्म होता है। डिप्टी साहब के घर आये भैयासाहब बचपन सेनाजिर मुंशी को जानते हैं। उनके हँसमुख, विनोदप्रिय स्वभाव से वे परिचित हैं। जब वे डिप्टी साहब के पोते की शादी में आते हैं तो उन्हें नाजिर मुंशी में बहुत अधिक परिवर्तन दिखाई देता है। नाजिर मुंशी से डिप्टी साहब के घरवालों का व्यवहार उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे नाजिर मुंशी से कहते हैं कि--

"नाजिर मुंशी, तुम हमारे रिश्तेदार हो, हमारे बुजुर्ग हो। क्या तुम्हें हम लोगों का व्यवहार अपमान जनक नहीं लगा।" ।1।

इस सवाल पर नाजिर मुंशी हँसते हैं और कहते हैं--

"हुजूर, क्या कहते हैं? मैं तो आप लोगों का खिदमतगार हूँ। आप लोग बड़े आदमी हैं, भला मैं आप लोगों की बराबरी कैसे कर सकता हूँ?" ।2।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 93
।2। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 93-94

नाजिर मुंशी के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि, अभावों में जीनेवाला मध्यम वर्गीय आदमी अपना अस्तित्व उच्च वर्गीय लोगों में खो देता है।

अमीर लोग ऐसे अस्तित्वहीन मध्यमवर्गीय लोगों को जिनका अस्तित्व उन्होंने ही छिना है अपना नौकर समझते हैं, और उनसे मालिक जैसा व्यवहार करते हैं, चाहे उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों। इन मध्यमवर्गीयों की यह धारणा बन जाती है कि उनका जीवन नौकरों की तरह काम करने के लिए ही है। इसलिए वे हमेशा अपने मालिक से दबकर रहते हैं। किसी बात पर भी उनका विरोध नहीं करते सब चुपचाप रह लेते हैं। उनकी आत्मा मानों मर जाती है। वे एक जिन्दा लाश की तरह जीते हैं।

"राख और चिनगारी"

कहानी की नायिका "गीता" पितृहिन है। उसके भाई ने उसे पढ़ाया लिखाया है। भाई की अचानक मौत से परिवार की सारी जिम्मेदारी गीता पर आ पड़ती है। घर में बूढ़ी माँ, विधवा भाभी और दो भांजे हैं। इन सब की परवरिश करने के लिए गीता शहर में अकेली रहकर नौकरी करती है। घर के लोगों के लिए जितना हो सके उतना ज्यादा रुपया भेजने के लिए उसने अपनी आवश्यकताओं को बहुत कम किया है। स्वयं की इच्छा आकांक्षाओं को दूर रखकर वह एकदम सादगी भरा जीवन जीती है। उसका व्यक्तित्व और अस्तित्व जिम्मेदारियों के बोझ के नीचे दब गया है।

दफ्तर तक चार मील वह साईकल पर आती है। दफ्तर में जितना हो सके उतना ज्यादा काम करने के बावजूद भी उसे अफसर की डाँट सुननी पडती है। वह कहीं भी आती जाती नहीं, बस अपने काम से काम रखती है। उसके अन्दर की छटपटाहट निम्नलिखित कथन से स्पष्ट दिखाई देती है:-

"मेरे अन्दर जलन है, उमंग है, जीवन है। सबकुछ है। लेकिन बेकार। समाज के आर्थिक ढाँचे ने राख बनकर हर तरफ से मुझे ढक लिया है, और उसने मेरे समस्त अस्तित्व को अपने अभिशाप से अच्छादित कर रखा है। पर दुर्भाग्य यह है कि, मैं पूरी तरह से राख भी तो नहीं बन पाती। अन्दरवाली चिनगारी जलती रहती है।"[1]

इत्तफाक से उसके जीवन में हिन्दी का अच्छा कवि रमेश आता है और उसका जीवन ही बदल जाता है। वह खुशीयों से झुमने लगती है। रमेश का शादी का प्रस्ताव

---

1. भगवतीचरण वर्मा -"मेरी प्रिय कहानियाँ" - पृ. 117

भी वह स्वीकार कर लेती है। लेकिन अपने भाई, विधवा भाभी, बूढ़ी माँ को देखकर उसे लगता है कि, वह अपने नीजि स्वार्थ के लिए इन सबका भविष्य अंधकार में ढकेलकर अपनी जिन्दगी के रंगीन सपने सजा रही है। उसे अपने भैया को मरते समय दिया हुआ वचन भी याद आता है, और वह एक ही पल में शादी न करने का फैसला कर लेती है। मरते दम तक अपनी जिम्मेदारियों को निबाहने की कसम खाती है। दिल पर पत्थर रखकर रमेश से दूर चली जाती है।

यह जिम्मेदारियों के बोझ से दबी हुई मध्यमवर्गीय लड़की की शोकान्तिका है। परिवार में जब पिता और भाई का साया सर से उठता है तब घर की पढ़ी लिखी लड़की को नोकरी करनीही पड़ती है। जिम्मेदारियों को बोझ उठाने के लिए उसे अपने अरमानों का गला घोटना पड़ता है।

"काश कि मैं कह सकता"

पति के मरने के बाद मध्यमवर्गीय औरत की दयनीय स्थिति का चित्रण कहानी कार ने इस कहानी में किया है। परिस्थितिवश अगर वह एक बार गिर जाये तो उसे सँभलने का मौका यह समाज नहीं देता। अगर वह चाहे तो भी इज्जत की जिन्दगी नहीं जी सकती। इस कहानी की नायिका निरुपमा ऐसी ही विधवा, जवान और खूबसूरत औरत है। उसके उपर सास, अनब्याही ननद, स्कूल में पढ़ता देवर और दो बच्चों की जिम्मेदारियों के साथ पतिदेव कुछ कर्ज भी छोड़ गये हैं।वह एक विद्यालय में अध्यापिका की नोकरी करती है लेकिन इतनी जिम्मेदारियाँ और कर्ज का निपटारा सिर्फ पचास रुपये वेतन में नहीं हो पाता। इसलिए वह मजबूरन अपना तन बेचने का गलत रास्ता अपना लेती है। कुछ ही दिनों में जब उसे अपनी गलती का अहसास होता है तो वह इस दलदल से और जिल्लत भरी जिन्दगी से निकलना चाहती है। वह ट्यूशन्स लेकर अपने पैसों की कमी को पूरा करना चाहती है। लेकिन समाज के उच्च वर्ग के लोग उससे बड़ी बेहरमी से पेश आते हैं। उसे इस दलदलसे निकलने ही नहीं देते। कलक्टर रामनाथ उसेक बारे में अपने मित्र नरेशचन्द्र से कहते हैं--

"देखते हो उस औरतको कैसी है? है न सुन्दर और पढ़ी लिखी भी है। मेरे यहाँ वह लड़कों को ट्यूशन करना चाहती है। और मैं जानता हूँ कि वह मुझे पढ़ा सकती है, समझे।

नहीं समझे! कितने बेवकूफ हो। अरे, कुछ रुपयों में तुम इसे पा सकते हो सिर्फ कुछ रुपयों में। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। जिन्होंने उसे मेरे यहाँ बच्चों को ट्यूशन के लिए भेजा है, उन्होंने मुझसे स्पष्ट कर दिया था, बच्चों को पढ़ाने के साथ साथ वह मुझे भी पढ़ा सकती है।" ।1।

वे उसे वेश्या से भी गई-बीती समझते हैं, और उससे अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहते। फिर भी वे उसके सौन्दर्य को देखकर अपनी वासना को नहीं छिपा सकते।

अत: समाज की बेरहमी के कारण विवशतावश फिर निरुपमा को अपना पहला रास्ता अख्तियार करना पड़ता है। वह फिर वेश्या बन जाती है। यह सब उसे अपने बच्चों के लिए और अन्य जिम्मेदारियाँ निबाहने के लिए करना पड़ता है।

बेसहारा मध्यमवर्गीय औरत को समाज में प्रतिष्ठा और इज्जत नहीं मिलती। अगर उसके सर पर जिम्मेदारियों का बोझ हो तो उसकी हालत बहुतही दयनीय हो जाती है।

स्वतंत्रतापूर्व मध्यम वर्ग की कठिन परिस्थितीयों का तथा कठिनाईयों का चित्रण उपर्युक्त कहानियों में भगवतीबाबू ने किया है। तत्कालिन मध्यमवर्गीय समाज पूँजीपतियों के शिकंजे में फँसा था। उन्हें अमीरों का दामन पकड़कर चलना पड़ता था। उच्च शिक्षित होते हुए भी बेकारी की भयानकता का सामना करना पड़ता था। समाज में अपनी हैसीयत का झूठा स्वाँग रचाना पड़ता था। मध्यम वर्गीय औरतों की स्थितिभ अत्यंत शोचनीय थी। अगर कोई बेसहारा औरत नौकरी करने के लिए घर से बाहर निकलती तो उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अत: मध्यमवर्गीय लोगों के अभावग्रस्त जीवन का हूबहू चित्रण इन कहानियों में मिलता है।

मध्यम वर्गीय लोगों में दिखाई देनेवाले अन्य पहलू

।1। समाज में नाम कमाने की तथाप्रतिष्ठा प्राप्त करने की लालसा

"लाला तिकड़मीलाल"

कहानी का मुख्य पात्र "लाला तिकड़मीलाल" तीस वर्षीय, गोलमटोल जवान युवक है। वह एक साधारण व्यापारी है। एक दिन वह एक कवि सम्मेलन में जाता है।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 3।

वहाँ कवि सम्मेलन के सभापति ठाकुर नामवरसिंह होते हैं, जो एक बहुत बड़े जमींदार, अगाध सम्पत्ति के स्वामी और एक कलाप्रेमी हैं। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कविता की पुस्तक लिखनेवाले को पाँच सौ रुपये का इनाम जाहीर किया हुआ है। इसलिए सब कवियों ने उनके गुण-गौरव पर अनेक कविताएँ लिख डाली हैं और उसे गा रहे हैं। यह देखकर लाला तिकड़मीलाल प्रभावित हो जाता है। उसे लगता है रुपये के साथ प्रतिष्ठा भी कोई चीज है। उसपर नाम कमाने की धुन सवार हो जाती है।

सोच विचार करके प्रतिष्ठाप्राप्त करने के लिए वह सर्वश्रेष्ठ कवि को अपने नाम का पाँच सौ रुपये का "तिकड़म पुरस्कार" जाहीर करता है। सब कवि उसके गुणगाण पर कविताएँ लिखकर गाने लगते हैं। सर्वश्रेष्ठ कवि का चुनाव करने के लिए सब कवियों से किताबों की दस दस प्रतियाँ माँगकर तिकड़मीलाल उन किताबों को एक पुस्तक के डीलर को छे सौ रुपये में बेचता है।

महाकवि टेव जो अपनी सम्पत्ति के बलपर महाकवि बन बैठा है, तिकड़मी लाल से कहता है कि, तिकड़म पुरस्कार उसे ही मिलना चाहिए। इसपर लाला तिकड़मीलाल बड़ी चालाकी से कहता है कि, फिर तो उसे पुरस्कार के रूप में मिलने वाले पाँच सौ रुपये निर्णायकों में उसको चुनने के लिए बाँटने पड़ेंगे। इसके लिए भी टेवप्रसाद राजी हो जाता है।

तिकड़म पुरस्कार देने के लिए सभा का आयोजन किया जाता है। देवप्रसाद को सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित कर उन्हें तिकड़म पुरस्कार देने का ऐलान भी किया जाता है, इतने में कवि फटीशजी, जिन्हें लाला तिकड़मीलाल की चालबाजी मालूम हो जाती है, मंच पर आकर उसका भेद खोल देते हैं। वे कहते हैं:-

"भाईयों, इस तिकड़मीलाल ने कवियों से किताबें मँगाकर छ:सौ रुपये में बेच दी है और टेवजी को इसने एक पैसा नहीं दिया। यह बड़ा धूर्त और बानिया है। जिस एजन्ट के हाथ इसने किताबें बेची हैं, वह सब इसके पत्रों के सबूत मौजूद है।"[11]

अन्त में लाला तिकड़मीलाल की प्रतिष्ठा और पैसा दोनों प्राप्त करने की चाल कामयाबी के शिखर पर पहुँचकर नाकामयाब हो जाती है।

कुछ मध्यमवर्गीय युवकों की जो पैसा सो बियावाली प्रवृत्ति का मनोरंजक चित्रण यहाँ वर्माजी ने किया है।

---

[11] भगवतीचरण वर्मा - दो बाँके" पृ. 84

"बेकारी का अभिशाप"

उच्च मध्यम वर्गीय लोग समाज के सुखी मस्तमौला होते हैं। उन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। उनको नेतागिरी करने का, देशसेवक बनकर नाम कमाने का, किसानों और मजदूरों के हिताहित पर सोचने का, देश की दरिद्रता पर मार्मिक लेख लिखने का और जनता को संगठित करने का शौक होता है। ये सब काम वे अपना समय बिताने के लिए करते हैं। तथा दुनिया में नाम कमाने के लिए करते हैं। नेता की पदवी की रक्षा करने के लिए कुछ दिन जेल भी जाते हैं। वहाँ दंड की रक्कम अदा कर "ब" वर्ग पाते हैं और जेल में भी आराम से रहते हैं। अपने आपको सोशालिस्ट और गाँधीवादी समझते हैं। प्रस्तुत कहानी में इस बात को स्पष्ट किया है। इसमें उच्च मध्यम वर्ग के प्रतिक राजनीतिक कैदी, "गुप्ता" और "तिवारी" ने अपने मनोभावों उद्घाटन किया है--

" हम लोग जेल गये थे, दुनिया की निगाह में अपने सिध्दान्तोंपर बली होकर, पर वास्तव में तफरीहन। अधिक काम काज से कुछ थकावट आ ही जाती है, अधिक सोचने तथा वादविवाद करने के बाद मस्तिष्क कुछ विश्राम चाहता है और साथ ही नेता की पदवी की रक्षा करना भी तो आवश्यक होता है। ऐसी हालत में छः महिने जेल के अन्दर रह जाना यदि वास्तव में देखा जाये तो हमारे लिए आवश्यक था। "ए" क्लास मिला, भोजन अच्छा और काम, कसरत करना और मलारे गाना। दिनभर पढ़िए लिखिए और जब इनसे तबीयत उचट जाए, तब गपबाजी कीजिए। शायद इतना अधिक आराम तो किसी पहाड़ पर भी नहीं मिलता। वहाँ चिन्ता रहती है, किराया देना है, खाने के दाम देने हैं और न जाने कहाँ-कहाँ के खर्च निकल आते हैं। ऐसी अवस्था में स्वभावतः पहाड़ का आराम महँगा पड़ता है और साथही लोग उँगली उठाने लगते हैं कि अमुक व्यक्ति पूँजीपति है और अगर पूँजीपति नहीं है तो काँग्रेस का रुपया खाये जाता है। इसलिए जब 1932 में काँग्रेस मूवमेन्ट शुरू हुआ तो हमे लोगों को जबरदस्ती जरा-जरा सी बात पर जेल जाने को मजबूर होना पड़ा। "।1।

भगवतीचरण वर्मा ने यहाँ स्वतंत्रतापूर्व उच्चमध्यमवर्गीय लोगों की नेतागिरी और देश हित की बातों के पीछे छीपी स्वार्थपरता को स्पष्ट किया है।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" - पृ.26-27

(2) मध्य वर्गीय युवक - युवतियों की अमीर बनने की धुन

"तिजारत का नया तरीका"

इस कहानी में लेखक ने मध्यमवर्गीय नवयुवकों की अधिक रुपया कमाने की धुन का बड़ाही मनोरंजक चित्रण किया है। कहानी का नायक "खुशबख्तराय" ऐसा ही नवयुवक है। जो अपनी शिक्षा अधूरी छोड़कर कोई व्यवसाय करके एकदम अमीर बनना चाहता है।

खुशबख्तराय एम.ए. में पढ़ रहा है। परीक्षा के पहले ही उसके पिता का शराब के नशे में तिमंजिले से गिरकर देहान्त हो जाता है। पिता के सब अंतिम संस्कार पूरे हो जाने के बाद खुशबख्तराय पिता ने उसके वास्ते छोड़ी हुई कर्ज से लदी हवेली बेच देता है और सब कर्ज की रकम अदा करने के बाद उसके पास पाँच हजार रुपये बचे रहते हैं। अब एम.ए. की परीक्षा देना उसे जरूरी नहीं लगता अपने मित्र सुरेश के पूछने पर कि, तुम क्यों नहीं परीक्षा देना चाहते? खुशबख्तराय कहता है--

"परीक्षा देकर क्या करूँगा। एम.ए. पास करके कौन सी नौकरी मेरे वास्ते रखखी है? चालीस पचास रुपये की क्लर्की से तो भूखे मरना अच्छा है।"(1)

इस जवाब पर फिर सुरेश पूछता है, तो फिर करोगे क्या?

खुशबख्तराय बताता है, अब मेरे पास जो पाँच हजार रुपये हैं, इन से मैं तिजारत करूँगा - उसके विचार देखिए:-

"और सुरेश, तिजारत से ही आदमी अमीर हो सकता है। नौकरी करके आप करोड़पति नहीं बन सकते - तिजारत करो। और हम पढ़े लिखे लोग तिजारत करना नहीं चाहते। इसीलिए तो बेकारी बढ़ रही है। फिर मैं कहता हूँ कि,अगर ये निरक्षर मारवाड़ी लाखो रुपये तिजारत से पैदा कर सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं इसमें सफल हो सकता, जब कि मैं काफी शिक्षित हूँ।"(2)

अतः पढ़ाई बीच में हीछोड़कर वह तिजारत करना शुरू कर देता है। पहले वह एक आदमी के साझे में एजेन्सी लेता है और काम काज उस आदमीपर सौंपकर स्वयं कलकत्ता शहर की रंगत देखने में खो जाता है। वह आदमी उसे धोखा देता है। आठ हजार रुपये का घाटा दिखाता है। फिर भी खुशबख्तराय हार नहीं मानता वह कहता है इससे मैने यह सीखा कि दुनिया में किसीपर भी विश्वास नहीं करना

(1) भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ.57
(2) --"-- वहीं --"--

चाहिए। अब मैं जो व्यापार करूँगा, उसमें यह अनुभव मेरी सहायता करेगा।

अब उसके पास सिर्फ एक हजार रूपया बचा है। इससे वह कोई छोटा सा धन्दा करने की सोचता है, जो बढ़ते बढ़ते बडा धन्दा बन जायेगा। यह सोचकर वह युनिव-वर्सिटी में रिस्टोरॉं खोलता है। लेकिन यहाँ भी सब उसे लूटते हैं। दूना चौगुना हिसाब बनाकर रेस्टोरॉं की निलामी करवाते हैं और खुशबख्तराय का सारा पैसा उधार में फँस जाता है।

रिस्टोरॉं की निलामी के बाद खुशबख्तराय के पास सिर्फ सौ रूपये रहते हैं अपने मित्र सुरेश से चार सौ रूपये लेकर जाली नोट बनानेका रोजगार करता है। और पकड़ा जाता है। इस समय भी हमेशा की तरह वह अपने वकील मित्र सुरेश के कारण बच जाता है। अब क्या करे? उसे कुछ समझ में नहीं आता। फिर कुछ दिन बाद उसके दिमाग में पैसा पैदा करने का सुन्दर तरीका आता है। वह यह कि, शहर के सबसे बड़े सेठ को पाँच हजार रूपया देने के लिए कहता है और न देने पर बीच चौराहे पर पाँच जूते मारने की धमकी देता है। सेठ रूपये देने के लिए इन्कार कर देता है। तो खुशबख्तराय सचमुच उसे बीच चौराहे पर पाँच जूते मारता है। उसे छह महिने की जेल हो जाती है। वह अपने वकील मित्र सुरेश से कहता है। छः महिने के बाद फिर मैं सेठ को यह धमकी दूँगा। और मुझे यकिन है, सेठ इस बार यकिनन रूपये देगा।

व्यापार करके अधिक रूपया कमाने के लिए निकले मध्यवर्गीय नव युवकों का यही हश्र होता है। एक तो वे तिजारत के तौर-तरिकों से तथा छक्के-पंजों से अच्छी तरह वाकिफ नहीं होते। शुरू में इसके कारण वे रूपया कमाने की जगह गँवाते हैं। और बाद में उनका नैतिक पतन होता है। ऐसे युवक जीवन में नाकामयाब होते हैं।

"बॉय! एक पेग और"

इस कहानी में मध्यमवर्गीय युवती की धनलिप्सा को दिखाया है। वह धन के लिए एक अमीर नवयुवक से प्यार करती है। बाद में उस नवयुवक के धन की निलामी की बात सुनकर तुरन्त दूसरे अमीर नौजवान से शादी कर लेती है। ऐसा करते वक्त अपने पहले प्रेमी के निस्सीम प्यार की भी परवाह नहीं करती। बाद में उसे पछताना पड़ता है क्योंकि उसने सुनी हुई बात गलत होती है और जिससे वह शादी करती हैं उसीकी सम्पत्ति निलाम हो जाती है।

मध्यम वर्गीयों में दिखाई देनेवाली झूठी शान तथा दिखावे की भावना

"इन्स्टालमेन्ट"

प्रस्तुत कहानी के नायक "चौधरी विश्वम्भर सहाय" झूठी शान तथा दिखावे की भावना से ग्रसित मालूम होते हैं।

एक दिन कहीं जाते वक्त उन्हें मुश्किल से एकदम पुराना फटियर इक्का मिलता है। चौधरीजी इसी प्रागैतिहासिक इक्के पर बैठकर चले जाते वक्त उनकी दाहिनी ओर से एक ताँगा आता है। उस पर प्रभा और कमला बैठी होती हैं जो उनके साथ युनिवर्सिटी में पढ़ती थीं। उन्हें देखते ही चौधरीजी शर्म से पानी पानी हो जाते हैं। देखिए:-

" सुरेश, क्या कहूँ इनको देखते ही मेरा चेहरा पीला पड़ गया, कलेजा धक से हो गया। अगर इन्होंने मुझे इस इक्के पर देख लिया तो?" [1]

उनकी सहेलियाँ उन्हें देख न पाये इस लिए अपना मुँह फेर लेते हैं। परन्तु इक्के में अकेले होने के कारण उनका छिप-पाना असम्भव हो जाता है। प्रभा और कमला अपना ताँगा रूकवाती हैं और चौधरी को देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। इस समय अपमानित चौधरीकी जो स्थिति हुई उसका वर्णन उसीके मुख से देखिए:-

"लज्जा और क्रोध से मेरे मुख का रंग बेर-बेर बदल रहा था। दिल में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे, कभी तबीयत होती थी कि, इसे इक्केवाले की जान ले लूँ, कभी तबीयत होती थी कि इस इक्केवाले की जान ले लूँ, कभी अपनी जान लेने की सोचना था। फिर कभी उन दोनों का गला घोंट देने की तबीयत होती थी।" [2]

अपमानित चौधरी अपना इक्का रूकवाता है। ता कि उनके सामने से न गुजरना पड़े। लेकिन जब प्रभा और कमला चलने का नाम ही नहीं लेती तब चौधरी जी इक्केवाले से कहकर अपना इक्का मोड़ लेते हैं और फिर जहाँ से आये उसी जगह पहुँच जाते हैं।

अपमानित चौधरी साहब अपनी हैसीयत का प्रदर्शन करने के लिए "इन्स्टालमेन्ट" योजना पर कार खरिद लेते हैं। वे उन लडकियों को अपनी कार दिखाने की इच्छा से दो महिनों तक उनकी खोज करते रहते हैं। शहर की हर सड़क छान डालते हैं, इतनाही

[1] भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" पृ. 122
[2] --"-- वहीं --"-- पृ. 123

नहीं बल्कि इन लड़कीयों के मकान के तो न जाने कितने चक्कर लगाते हैं? उनकी यह जिद्द थी की, दोनों लड़कियाँ उनकी कार को एक बार देख ले तो वे दो-चार दिन बाद ही उसे बेच डालेंगे। सच बात तो यह है कि, उन्होंने इन्स्टालमेन्ट पर कार खरिद तो ली है पर उनके पास इन्स्टालमेन्ट भरनेके लिए रुपये नहीं है। रुपयों का इन्तजाम उन्हें अपने मित्र सुरेश से करना पड़ता है।

लड़कियों के हँसने पर अपना अपमान महसूस करना, उन लड़कियों पर अपनी रौब जमाने के लिए कार खरिदकर आर्थिक संकट मोल लेना तथा उनको गली-गली ढूंढते फिरना आदि बेवकूफी की बातें हैं। चौधरी साहब का यह व्यवहार उनकी मध्यवर्गीय मनोवृत्ति की देन है। मध्य वर्ग अपनी शक्ति से बाहर खर्च करके उच्च वर्ग की नकल करना चाहता है, इसी कारण उसके आचरण में असंगती पैदा हो जाती है।

इस कहानी में झूठी प्रतिष्ठा के लिए आर्थिक संकट मोल लेनेवाले मध्य वर्ग की आत्मघाती वृत्ति का मजाक उड़ाया गया है।

निम्नवर्ग:-

भगवतीचरण वर्मा शहरी वातावरण में पले हैं और सदैव शहरी वातावरण में ही उनका जीवन बीता है। इसलिए उनकी कहानियों का विषय शहरी जीवन में पले बुध्दिजीवी वर्ग तक ही सीमित रहा है। फिर भी उनकी कुछ कहानियों में निम्नवर्ग की झाँकियाँ दिखाई देती हैं। जो निम्नलिखित है।

"अर्थपिशाच"

इस कहानी में पूँजीपति व्दारा लूटे गये एक गरीब दुर्बल व्यक्ति का यथार्थ चित्रण कहानीकार ने किया है। इस का नायक एक करोड़पति वृध्द है, जो अपने जीवन की अंतिम साँसे गिन रहा है। फिर भी उसमें जीने की अत्याधिक लालसा है। अपना जीवन बचाने के लिए वह डाक्टर को अपनी सम्पत्ति का आधा हिस्सा देने के लिए तैयार हो जाता है। वह इतना क्रूर और लालची है कि उसने गरीबों को धोखे से लूटा है और करोड़पति बन बैठा है। उसे दवा देने के लिए आया हुआ डाक्टर उस करोड़पति व्दारा लूटे गये गरीब दुर्बल व्यक्ति को अपनी आँखो से देखता है। जिसका वर्णन उसके शब्दों में देखिए-

"मैने पीछे फिरकर देखा, एक दुबला-पतला व्यक्ति खडा था। उसकी एक एक हड्डी गिनी जा सकती थी और वह एक फटा चिथड़ा पहने था।"॥1॥

उस गरीब की यह हालत करोड़पति वृध्दने बनायी है। उसने धोखे से उसकी सब सम्पत्ति हड़प ली है और उसपर अपना कानूनी अधिकारी जमा बैठा है। इसी तरह एक विधवा की भी उसने यही हालत बनाई है। विधवा का पति जब जिन्दा था उस समय रोड़पति ने उसे कर्ज दिया था, वह भी जाली नोटों के रूप में पति के मर जाने के बाद उस कर्ज के बदले में वह उसकी सब सम्पत्ति हड़प लेता है। जब वह विधवा स्त्री अपने चार छोटे छोटे बच्चों को लेकर विवशतावश करोड़पति के पास जाकर दया की भीख माँगती है तो वह उसे जलील करके घर से निकालते हुए कहता है--

---

॥1॥ भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" पृ. 16

"दूर हट चुड़ैल, मैं क्या करूँ, जो तू भीख माँगती हैं। तेरा घर बार मैने अपने कर्ज के बदले में लिया है। तेरे पति ने क्यों मुझसे कर्ज लिया? कौन कहता हैं कि वह रूक्का जाली था। अदालत की तो डिग्री हो गई थी। तेरे बच्चे भूखों मरते हैं, तो उनका गला घोंट दे। तू भूखी मरती है तो वेश्या बन जा- निकल मेरे यहाँ से नहीं तो अभी नौकरों को बुलाकर तेरी आबरू उतरवा लूँगा।" ।1।

"बेकारी का अभिशाप"

भारत में स्वतंत्रता के पूर्व मजदूर और किसानों की स्थिति बहुतही शोचनीय थी। इन लोगों में शिक्षा का अभाव था। इसके बारे में कांग्रेस के नेता मि. गुप्ता और तिवारी जो राजनीतिक कैदी भी है, उनकी बातों से पता चलता है। मि. गुप्ता कहते हैं--

" आप लोगों ने मजदूरों की हालत देखी है। वे लोग अंधेरी कोठरियों में रहते हैं। गन्दी आदतों ने उनमें जड़ जमा रखीहै। शिक्षा का उनमें अभाव है। वे लोग यह जानते ही नहीं हैं कि" डिसेन्सी" का जीवन के विकास में क्या स्थान हैं। ।2।

मि. तिवारी ने किसानों की अशिक्षा और उनकी शोचनीय अवस्था की ओर संकेत किया है।

"खिलावन का नरक"

कहानी का नायक "खिलावन" बहादुरपूर में रहता है। उसके घर की हालत बहुतही दयनीय होने के कारण वह अपनी गरीबी को दूर करने के लिए अपने माँ, बाँप, भाई और पत्नी इन सबको छोड़कर बम्बई आता है। वहाँ आकर वह मिल में मजदूरी करने लगता है। एक छोटे से कमरे में बारह व्यक्तियों के साथ रहता है। अपना पेट काटकर रूपया बचाता रहता है। एक दिन अचानक मिल में हड़ताल हो जाती है , और काफी दिनों तक जारी रहती है। जिसके कारण खिलावन के पेट काटकर जमा की हुई सब पूँजी खत्म हो जाती है। जिस कमरे में वह रहता है उसका मालिक किराये के लिए तकाजा करने लगता है। और आखिर में किराया नहीं दिया तो

।1। भगवतीचरण वर्मा-"इन्स्टालमेन्ट" पृ.17
।2। --"-- वहीं --"-- पृ.27

जेल भिजवाने की धमकी देता है। धमकी से घबराकर खिलावन अपना कपड़ा और सामान वहीं छोड़कर भाग आता है और बहादुरपुर जानेवारी रेलगाड़ी पकडता है। उसके पास अब टिकट के लिए भी पैसे नहीं बचे हैं। इसलिए वह थर्डक्लास के डिब्बे में बेंच के नीचे लेटकर सफर करता है। घर के लोगों से मिलने के लिए वह बहुत ही उत्सुक दिखाई देता है। अपनी जवान पत्नी सुखिया के बारे में सोचकर वह पुलकित हो जाता है। लेकिन जब वह सोचता है कि माँ, बाप, भाई सब उसकी तरफ स्वार्थ की आशा से देखेंगे तब उन्हें क्या बता दूँ? इस विचार से वह उदास हो जाता है। क्योंकि अब उसके पास एक कौड़ी भी नहीं है।

इधर बहादुरपुर में उसकी पत्नी सुखियां घर के लोग भूखें न मर जाए इसलिए गाँव के जिलादार से सम्बध रखती है और घर के लोगों का पोषण करती रहती हैं। उसके सास, ससुर, सबकुछ मालूम होते हुए भी परिस्थितिवश चुप रह जाते हैं।

खिलावन बिना टिकट रेलगाड़ी से अपने गाँव तक तो पहुँच जाता है लेकिन घर तक पहुँचने के पहले ही रास्ते में जोरों की बारीश शुरू हो जाती है। वह पास ही के एक पुराने मंदीर मे रूकता है। मंदिर के अन्दरवाले हिस्से से उसे सुखिया की आवाज सुनाई देती है। वह अन्दर झाँककर देखता है तो उसे सुखिया जिल्लादार के साथ बाते करती हुई दिखाई देती है। सुखिया अपने देवर को जमीन दिलवाने के लिए जिलादार की मिन्नते कर रही है। साथ ही अपने पति खिलावन को गालियाँ भी दे रही है। देखिए--

"कहाँ आज छै महिना से न एक रूपया भेजिस और न कौनों चिठ्ठी पत्री लिखिस। मालूम होत है कौनों राँड के फेर माँ पड़िगा। नास होय ऊका। इहाँ घर माँ सब भूखन मरत हैं। तुम्हारे पाँच रूपये से आज खाना मिला है।" ।1।

सुखिया का यह रूप देखकर और अपने संबंध में उसके मुँह से गालियों की बौछार सूनकर खिलावन का दिल टूट जाता है। अतः वह घर जाने के बजाय वापस स्टेशन आता है, उस गाड़ी का इन्तजार करने जो उसे एक नरक से दूसरे नरक में ले जानेवाली है।

मिल मालिक, घर मालिक जैसे उच्च वर्गीय लोगों के अत्याचार और बेरहमी के कारण खिलावन का रूपया कमाने का सपना, सपना ही रहता है। धन कमाकर

।1। भगवतीचरण वर्मा -"मेरी प्रिय कहानियाँ" पृ. 70

परिवार को सुखी करने का अरमान टूट जाता है। उसके परिवार को दो वक्त की रोटी के लिए अपने नैतिक मूल्यों से गिरना पड़ता है। खिलावन की स्थिति ऐसी होती है जैसे धोबी का कुत्ता न घर का ना घाट का।

"पियारी"

कहानी की नायिका "पियारी" है। उसका पति नारायण बैंक में चपरासी का काम करता है। आमदनी बहुत कम है और पियारी को गहने, कपड़े पहनने का बड़ा शौक है साथ ही मेले, तमाशे देखने की भी आदत है। पति की तनख्वाह में ये सब बातें पूरी नहीं हो पाती। अतः इसे पूर्ण करने के लिए वह उसका पति कामपुर चला जाने के बाद, अपना तन बेचकर रुपया कमाना शुरू कर देती है। और अपने शौक पूरे करती रहती है। फिर भी वह दिल की बहुत अच्छी है। लेखक के प्रति उसका निर्व्याज प्रेम देखकर इस बात का पता चलता है। लेखक अपने बचपन में उसके पड़ोस में रहते थे। पियारी उन्हें राजा-बाबू कहकर बुलाती थी, खिलौने लाकर दिया करती थी। प्यार से अपनी गोदी में बिठाती थी। लेखक चौदह-पन्द्रह वर्ष के हो जाने पर जब भी वह उन्हें देखती तो मुस्कराकर कहती--

"अरे राजाबाबू! तुम तो भूल ही गये। कहो, पढ़-लिख तो रहे हो। खूब दरजा पास करो- अमीर आदमी बनो।" ।1।

पियारी और उसका पति नारायण दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं अपनी पत्नी को गहने बनवाने के लिए नारायण बैंक से रुपयों का गबन करता है। पकड़े जाने पर उसे जेल हो जाती है। तब पियारी बहुत रोती है। उसके बाद वह खुले आम वेश्या व्यवसाय करने लगती है। अन्त में उसकी काफी दुर्दशा होती है। उसका शरीर फोड़ों से भर जाता है, आँखो की रोशनी चली जाती है और उसपर फूटपाथ पे बैठकर भीख माँगने तक की नौबत आती है। फिर भी वह अपने पति को याद करती रहती है। इस हालत में जब लेखक उसे देखते हैं तो बहुत दुःखी हो जाते हैं। उन्हें बचपन में उसने किया हुआ प्यार याद आ जाता है। और वे उसके पास जाकर उसे पुकारते हैं। उनकी पुकार सुनकर उसे लगता है मानो उसका पति ही उसेपुकार रहा है। वह बलपूर्वक आँखे खोलने का प्रयत्न करती है। लेकिन उसे कुछ दिखाई नहीं देता। जब लेखक बताते हैं कि मैं हूँ राजा बाबू तब उसके चेहरे पर

।1। भगवतीचरण वर्मा - प्रतिनिधी कहानियाँ" पृ.57।

निराशा छा जाती है। इस हालत में भी वह लेखक की पूछताछ करती है। पढ़ने लिखने और खूब दरजा पास करने का आशिर्वाद देती है और कहती है--

" राजाबाबू! एक विनै है- जब उई मिले तो कहिं दिन्हब कि रास्ता देखत देखत ...।"।1।

इतना कहने के बाद वह जमिन पर लुढ़क जाती है। मानों पति से मिलने के लिए ही उसने अपने प्राणों को रोक रखा था।

इधर नारायण भी जेल से छिहा होनेपर जगह जगह पियारी को ढूँढने की कोशिश करता है।

इस कहानी में यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि, निम्नवर्गीय लोगों का पतन रूपयों की कमी और उनकी उँची अभिलाषाओं के कारण किस तरह होता है। इसका

उपर्युक्त कहानियों में निम्नवर्गीयों का यथार्थ चित्रण वर्माजी ने किया है। उन्होंने यही स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है, कि, पहले से ही अभावों मे जी रहे निम्न वर्गीय लोगों का जीना, पूँजीपतियों के अत्याचारों के कारण और भी मुश्किल हो जाता है। रूपयों की कमी के कारण कभी कभी उन्हें दो वक्त की रोटी भी मिलना कठिन हो जाता है। जिस के कारण उनके नैतिक मूल्यों का पतन होता दिखाई देता है। साथ ही कभी कभी अपनी उँची अभिलाषाओं के कारण वे अपनी नैतिकता से गिरते नजर आते हैं।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"प्रतिनिधी कहानियाँ" -पृ. 73

वर्ग संघर्ष

वैज्ञानिक तंत्र और औदयोगिकरण के कारण अर्थतंत्र को बहुत प्रभावित किया है। औदयोगिकरण के कारण अमीर अधिक अमीर होता चला गया और गरीब अधिक गरीब ऐसी विषम अर्थस्थिति का शिकार मध्य वर्ग हुआ। आज जीवन में रुपया एक महत्व पूर्ण अंग है। अर्थ से ही मनुष्य का दर्जा पहचाना जाता है। यदि पैसा है तो सबकुछ है नहीं तो इसके अभाव में सम्भव भी असम्भव बन जाता है। व्यक्ति अधिक से अधिक अर्थापार्जन के लिए ही अनैतिक, क्रूर, गैर कानूनी कार्य कर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल में आर्थिक कठिनाईयों के कारण उत्पन्न संघर्ष दिखाई देता है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार से अनेक मध्यम वर्गीय नव युवक शिक्षित तो बन गये लेकिन बेरोजगारी की समस्या, पूँजी और उदयोग पर पूँजीपतियों का एकाधिकार आदि के कारण समाज में वर्ग संघर्ष का निर्माण हुआ। समाज में एक और पूँजीपति अर्थात उच्च वर्ग और श्रमिक वर्ग याने निम्नवर्ग का उदय हुआ तो दूसरी और इनके बीच शिक्षित बेरोजगारी की समस्या से पीड़ित अल्प वेतन पर काम करनेवाले मध्यमवर्ग का अस्तित्व मुखर हुआ। अर्थ से उत्पन्न वर्ग संघर्ष का चित्रण वर्मा ने अपनी कहानियों में किया है। साथ ही साथ सबल-निर्बल संघर्ष, स्त्री पुरुष संघर्ष आदि के दर्शन भी उनकी कहानियों में होते हैं।

उच्चवर्ग और निम्नवर्ग का संघर्ष:-

उच्च वर्ग और निम्नवर्ग का संघर्ष पुरातन काल से चला आ रहा है। इसका मुख्य कारण है अर्थ की सम्पन्नता और विपन्नता। उच्च वर्गीय लोग गरीबों को हर तरह से शोषण करते हैं, उनपर अत्याचार करते हैं, और निम्नवर्गीय लोग अपने हक के लिए लड़कर भी हार जाते हैं। इसका चित्रण भगवतीचरण वर्माने निम्नलिखित कहानियों में किया है।

"अर्थपिशाच"

इसमें एक गरीब व्यक्ति को अपनी ही सम्पत्ति पर अधिकार जमाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और अन्त में हारना पड़ता है। इसके बावजूद उसे करोड़पति वृध्द के कडवे बोल भी सुनने पड़ते हैं। करोड़पति उसे कहता है।--

"नहीं, मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं वापस कर सकता। वह मेरी सम्पत्ति है। कानून से मेरी है। तुम कहते हो, मैंने धोखा दिया है, पर तुमने धोखा खाया क्यों? तुम बेवकूफ हो मैं अक्लमन्द, तुम निर्बल हो मै सबल। तुम न्याय चाहते हो? अदालत जाओ। तुम दया चाहते हो? भगवान से प्रार्थना करो। तुम इस दुनिया में रहने के लायक नहीं हो? जाओ, आत्महत्या कर लो।"[1]

करोड़पति के उपर्युक्त कथन में उस गरीब व्यक्ति और करोड़पति के संघर्ष के स्पष्ट दर्शन होते हैं।

"कुँवर साहब का कुत्ता"

इसमें नायक कुँवर साहब के घर आये हुए दो मेहमान अपना एकएक किस्सा सुनाते हैं जिसमें इस संघर्ष का स्पष्ट चित्र दिखाई देता है। इनमें से एक मेहमान जो एक अमीर आदमी है, एक दफे कुछ ज्यादा पिने के कारण अपने खिदमतगार को पीटता है। वह खिदमतगार जब कांग्रेसवालों के कहनेपर थाने में रपट लिखवाना चाहता है तब उसे धमकाते हुए कहता है।-

"अगर थाने तक पहुँचने की इत्तिला मुझे मिली तो खाल खिंचवा लूँगा।"[2]

अपने मालिक की इस धमकी को सुनकर खिदमतगार थाने तक पहुँचने की जुर्रत नहीं कर सकता, खामोशरह जाता है।

कुँवर साहब के घर आया दूसरा एक मेहमान अपने इलाके में आये एक कमिश्नर की खातिरदारी में दिनभर बेगारियों को चबेना देना भूल जाता है, तो एक बेगारी कमिश्नर से शिकायत करता है। कमिश्नर सुनी-अनसुनी करके चला जाते हैं। कमिश्नर के चले जाने के बाद वह उस बेगारी की इतनी पीटाई करवाता है कि बेचारा पन्द्रह दिन तक चारपाई से उठ नहीं पाता। बाद में उसे नौकरी से भी अलग कर देने के कारण उसपर भूखों मरने की नौबत आती है। यहाँ कहानिकार यह दिखाना चाहते हैं कि, निम्न वर्गीय लोग अपने हक की रोटी की माँग नहीं कर सकते हैं।

उच्च वर्ग औरनिम्नवर्ग के संघर्ष से और एक बात दिखाई देती है कि, निम्न वर्गीय लोग अपने अधिकारों के लिए, न्याय के लिए कितना भी संघर्ष क्यों न करे अन्त में उन्हें हार मानी पड़ता है। अपने अधिकारों की या न्याय की प्राप्ति तो

[1] भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" पृ.16
[2] --"-- वही --"-- पृ.48

दूर बल्कि उनके किये हुए संघर्ष का फल उन्हें अत्याचार या जुल्म के रूप में ही मिलता है।

मालिक- मजदूर संघर्ष तथा अफसर नौकर संघर्ष:-

जब भगवतीचरण वर्मा ने कहानी क्षेत्र में पदार्पण किया वह युग भारत का पराधीन युग था। मजदूर, किसान, निम्नवर्ग और सरकारी नौकरों की अवस्था बहुतही शोचनीय थी। क्योंकि ब्रिटीश सरकार पूँजीपति, जमींदार, मिल मालिक, और सरकारी अफसर और साहूकारों आदि इन मजदूरों का, कारकूनों का शोषण करते थे। स्वयं को न्याय की प्राप्ति के लिए उन्होंने अपने मालिकों से, अफसरों से किये हुए संघर्ष व्यर्थ ही दिखाई देते हैं। जिसके उदाहरण निम्नलिखित कहानियों में मिलते हैं।

"अर्थपिशाच"

इस में मिल मालिक और मजदूर का संघर्ष दिखाया है। जब मजदूर अपने अधिकारों की प्राप्त के लिए हड़ताल करते हैं, तो मालिक उनकी हड़ताल से घबराने की बजाय उन्हें धमकाता है कि--

"तुम्हारी हड़ताल मेरा जरा भी अहित नहीं कर सकती। मेरे पास करोड़ो रुपया है। मिल साल दो साल बन्द रहे तो रहे। लेकिन तुम भूखों मर जाओगे। समझे। मैं तुम्हारी तनख्वाह क्यों बढ़ाऊँ? तुम्हारी गरज हो तो काम करो, नहीं तो घर बैठो। तुम्हें गेहूँ खाने की क्या आवश्यकता? ज्वार और चना खाकर तुम जीवित रह सकते हो। फटे कपड़ें तुम्हारे तन ढँकने के लिए काफी हैं। एक कोठरी में तुम रह सकते हो। जाओ, निकालो, तुम पशु हो औरपशु की तरह रहो। अगर नहीं मानोगे तो एक एक को गोली से मार दूँगा।" ।1।

अपनी माँगे पूरी होने के लिए मजदूर लोग हड़ताल करते हैं लेकिन इससे माँगे पूरी होना तो दूर बल्कि उनपर भूखों मरने की नौबत आती है। अत: मालिकों से संघर्ष करने की बजाय मजदूरों को कष्ट के बदले में रूखी सुखी जो मिले उसमें ही सन्तुष्ट रहना पड़ता है।

"राख और चिनगारी"

इसकी नायिका "गीता" एक शिक्षित मध्यवर्गीय युवती है। अपनी माँ

।1। भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" - पृ. 17-18

विधवा भाभी, और भांजो के परवरीश की जिम्मेदारी अकेली गीतापर है। इसलिए वह नौकरी करती है। घर से दफ्तर तक की चार मील की दूरी साईकल से तय करती है। एक दिन रास्ते में ही साइकल खराब हो जाने के कारण उसे दफ्तर जाने में थोड़ी देर हो जाती है तो दफ्तर का मैनेजर उसे खूब डाँटता है। वह देर होने की वजह बताना चाहती है लेकिन मैनेजर के पास इतना वक्त नहीं कि उसकी बात सुन ले। अत: वह उसे कुछ बताने से पहले ही चुप करा देता है। और कडे स्वर में कहता हैं।-

"मैं बात नहीं सुनना चाहता- यह तीसरा मौका है। मुझे हेड क्वार्टर में तुम्हारी शिकायत करनी पडेगी। हाँ वह फाईल पूरी कर दी?" [1]

गीता कहती है- "जी, अभी थोडी देर में पूरी कर देती हूँ।" [2]

इसपर मैनेजर और भी कड़ी डाँट सुनाता है:-

" मै देख रहा हूँ मिस चौधरी कि, तुम अयोग्य और गैर जिम्मेदार हो। मैने कल कहा था कि वह फाईल मुझे सुबह चाहिए ही।" [3]

जब गीता बताती है कि फाईल बहुत बड़ी होने के कारण रात आठ बजे तक काम करके भी पूरी न हो सकी, तब मैनेजर कहता है।

" मै यह कुछ नहीं जानता- यह मेरी अन्तिम चेतावनी है। यदि तुम काम नही कर सकती तो त्यागपत्र दे दे। यह दफ्तर है और तुम नौकरी कर रही हो, यह याद रखना।" [4]

कारकूनों और अफसरों मे होनेवाले तनावपूर्ण संघर्षयुक्त वातावरण को यहाँ वर्माजीने दिखाया है। भगवतीबाबू के समय के पूँजीवादी युग में नौकरी करना याने

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"मेरी प्रिय कहानियाँ" पृ.113
[2] भगवतीचरण वर्मा -"मेरी प्रिय कहानियाँ" पृ.114
[3] --"-- वहीं --"--
[4] --"-- वहीं --"--

अपने अस्तित्व को भूल जाना था। मध्यम वर्गीय शिक्षित सम्रान्त लोगों के लिए नौकरी अेक अत्यावश्यक चीज थी। नौकरी के अलावा जीने के लिए और कोई साधन मध्यमवर्गीयों के पास नहीं था। मध्यमवर्गीय कारकुनों की परेशानियों की ओर ध्यान देना अफसर लोग अपना फर्ज नहीं समझते थे, बल्कि उनसे कोलू के बैल की तरह काम करवाना, बिना वजह उन्हें डाँटना, अपना गुस्सा उनपर निकालना वे अपना अधिकार मानते थे। यही उनमें होनेवाले संघर्षों का मुख्य कारण है।

सबल - निर्बल संघर्ष तथा इमानदार - बेइमान लोगोंका संघर्ष

इस दुनियामें सबल उसे कहा जाता है जो प्रतिकूल परिस्थिति में भी कामयाबी हासिल कर लेता है। ऐसा आदमी आपनी शक्ति ।चाहे रुपये की हो चाहे शारिरीक और युक्ति से अपना काम बनवाने में सफल होता है। निर्बल वह है जो अपनी झूठ तो दूर सच बात भी कह नहींपाता। शक्ती के अभाव में अपने हक से वंचित रहता है।

इस दुनिया में बेईमान लोग इमानदार लोगों को अपनी सबलता के कारण दबोच लेते हैं। या यो कहिए कि, उन्हें उनकी इमानदारी की सजा देते हैं। समाज में नित्य रूप में दिखाई देनेवाला यह सबल निर्बल संघर्ष और इमानदारी - बेईमानी का संघर्ष वर्मा की निम्नलिखित दो कहानियों में दिखाई देता हैः-

"कायरता"

इस कहानी का नायक "रामेश्वर" एक सच्चा और गरीब इन्सान है। अपनी सच्चाई के बावजूद भी उसे जीवन में हारना पड़ता है। आर्थिक और मानसिक निर्बलता के कारण उसे अन्त तक अभावग्रस्त जीवन जीना पड़ता है। अपने भाई की सम्पत्ति का एकमात्र वारिस होते हुए भी अपनी आर्थिक निर्बलता और डरपोक वृत्ति के कारण बुढ़ापे तक उस सम्पत्ति को न पा सकता है, न भोग सकता है। अपने बारे में वह खुद कहता है।-

"मुझको ही लिजीए न। मैं कायरता की जीती जागती तसवीर हूँ। यदि मुझ में थोड़ासा साहस हो तो मैं बहुत बड़ा आदमी बन सकता हूँ। बस थोडासा साहस और मेरे जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है। यही निराशा विवशता और सफलता का अस्तित्व जो मेरे उपर एक असह्य भार सा लदा हुआ है, यदि इसे एक बार अपने उपर से उतारकर फेंक देने भर का साहस होता तो! पर नहीं, मेरी कायरता मुझे अपराधी बनने से सदा रोकती रही है। और अब भी रोक रही है- मेरी सफलता में बाधा रूप खड़ी है।"ıı।

रामेश्वर की आप बीती इस प्रकार है। रामेश्वर के भाई को कोई सन्तान नहीं है। अत: रामेश्वर ही उसके भाई की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है। पर भाई की मृत्यु के बाद उसकी भावज उसे घर से निकाल देती है और जज को बड़ी रकम देकर मुकदमा जीत जाती है। मुकदमे का फैसला होता है कि, भावज की मृत्यु के बाद ही रामेश्वर को वह सम्पत्ति दी जाएगी। अत: वह अकेली ... करोड़ों की सम्पत्ति भोगती रहती है और रामेश्वर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक गन्दी कोठरी में जीवन बीताता रहता है। तीस बरस बाद उसकी भावज की मृत्यु हो जाती है। फिर एक बार रामेश्वर के हृदय में उमंग जन्म लेती है। वह बड़ी उमंग के साथ अपनी सम्पत्ति पर अधिकारी जमाने आता है। लेकिन वहाँ की स्थिती देखकर फिर एक बार निराशा के अंधकार में खो जाता हैं। क्योंकि वहा उसकी भावज का भतिजा परमानंद उस सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमाए बैठा हैं। वह अपने आपको रामेश्वर का भतिजा बताता है, और कहता है कि, उसके भाईने उसे गोद लिया है। रामेश्वर को पड़ोसियों से मालूम होता है कि यह सब उसकी दिवंगत भावज की चाल हैं।

ıı। भगवतीचरण वर्मा - "दो बाँके" - पृ. 26

जेवर को पूर्ण रूपसे मिटाने के लिए वह परमानन्द को यहाँ छोडकर मर जाती हैं। पडोसियों के कहनेपर रामेश्वर बड़ी उम्मीद के साथ फिर एक बार मुकदमा लड़ता है। इस मुकदमे के लिए बचे खुचे जेवर और अपना अन्य सामान भी बच देता है। लेकिन परमानन्द जज को पचास हजार रुपये रिश्वत देता है। इसलिए अब फैसला यकिनन रामेश्वर के खिलाफ होनेवाला है। हाईकोर्ट तक जाने के लिए उसके पास एक पैसा भी नहीं है। साथही उसके ऊपर कर्ज भी बहुत अधिक है। इन सब बातों के सोच विचार से वह एक महिने से बीमार पड़ जाता है। वह जानता है किकल परमानन्द के पक्ष में मुकदमें का फैसला होनेवाला है वह सोचने लगता है --

"थोडे से साहस की आवश्यकता है और मै पासा पलट सकता हूँ। मैं अगर उस जज को गोली मार दूँ तो अभी सबकुछ ठीक हो सकता है। परमानन्द अब दूसरी बार पचास हजार रुपये रिश्वत स्वीकार करने में मुझे शक है। बस थोडासा साहस मुझमें यदि होता तो। रही मेरी, मैं बूढा हूँ, यदि पकडा गया तो मेरी मृत्यु से मुझे विशेष हानी नहीं होगी। इस निराशा और असफलता के अस्तित्व की अपेक्षा मृत्यु अच्छी है। पर ऐसी हालत में मेरे बच्चे सुखी रहेंगे. [illegible] [illegible] और यदि नहीं पकड़ा गया तो मैं बहुत बड़ा आदमी हो जाऊँगा। पर नहीं यह सम्भव नहीं। मैं कायर हूँ और यह जानते हुए भी कि इस कायरता के कारण मैं पशुसे भी गया बीता हूँ मैं अपनी कायरता नहीं छोड सकता।"॥।

यहाँ कहानीकार ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि, सबल लोग पैसे के बल पर निर्बल लोगों को लूटते रहते हैं और इन सबल लोगों के साथ किया हुआ निर्बलों का संघर्ष नाकामयाब हो जाता है।

"जबरा मारे रोने न दे"

इस कहानी का पात्र "जयेंद्र जौहरी" झूठा फरेबी पत्रकार है। सच्ची खबरें नहीं छपवाता। लोगों से रिश्वत लेकर उनके गुनाहों पर परदा डालता है। बड़े बड़े मंत्री, पत्रकार, पुलिस अफसर, पुलिस सिपाही आदि लोगों को खिला-पिलाकर, उसने अपने बस में कर रखा है और लखनऊ के पत्रकारों का बादशहा बन बैठा है। सबको अपने उँगली पर नचाता रहता है। फिर भी कुछ पत्रकार ऐसे हैं जो किसी के इशारोंपर न

१। भगवतीचरण वर्मा - "दो बांके" - पृ. 28

चलकर सच्ची खबरें छपवाते हैं। इनमें से एक हैं "युगचेतना" के संपादक "दीनबन्धु पाठक" जो नेक शरीफ और इमानदार व्यक्ति हैं। अपने पत्र में बिना हिचकिचाते केवल सच्ची खबरें ही छपवाते हैं।

जयेंद्र जौहरी एक दिन रात के बारा बजे पार्टी खत्म करके प्रेस क्लबसे अपने घर लौटते वक्त रास्ते में उसकी भेट पुलिस सिपाही "बन्दु खाँ" और "रामाधार" से हो जाती है। दोनों सिपाही शराब पीने की इच्छा प्रकट करते हैं तो जौहरी उन्हें फिर प्रेस क्लब ले जाकर शराब पिलाता है। दोनों खुश होकर जौहरी साहब की कुछ खिदमत करना चाहते हैं। जौहरी को सिगरेट पीने की तलब आती है। अतः तिनो सौ कदम की दूरी पर होनेवाले रग्घु पानवाले की दूकानपर जाते हैं। जौहरी पास ही एक पेड़ के निचे रूकता है और दोनों सिपाही दूकान के पास चले जाते हैं। रात के बारह बजने के कारण और सर्दी कुछ ज्यादा होने कारण रग्घू जल्दीही दुकान बन्द कर अन्दर सोया होता है। सिपाही दुकान का दरवजा खटखटाते हैं। रग्घू निन्द से जाग जाता है फिर भी दूकान खोलने से इन्कार कर देता है। फिर दोनो सिपाही दूकान पर डंडे बरसाना शुरू कर देते हैं। इसलिए कि, दुकान न टूट जाय, रग्घू दूकान तो खोलता है, लेकिन सिगरेट देने से इन्कार करता है। सिपाही कहते हैं, जौहरी साहब बादशहा हैं, मूँहमाँगा दाम देंगे। इस पर रग्घू अकड़कर कहता है --

"साहब हरामी का पिल्ला है, रात को डाका डलवाता है, हम नहीं बेचते सिगरेट।"॥1॥

रग्घू के इतना कहनेपर बन्दू खाँ गुस्से से उसे एक तमाचा मारता है और रामाधार विल्स का पैकट लेकर जौहरी को देने के लिए दौड़ने लगता है तब रग्घू रामाधार को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौडता है। यह देखकर बन्दू खाँ रग्घू के पैरों में अपनी लाठी अडाकर उसे जमीपर गिरा देता है। दोनों उसे पीटने लगते हैं। उसी वक्त युगचेतना के सम्पादक दीनबन्धु पाठक वहाँ से गुजरते वक्त रग्घू की पीटाई देखकर रूक जाते हैं और (उसे बचाने की कोशिश करते हैं तो दोनो सिपाही उन्हें) हवालात में बन्द कर देते हैं। दीनबन्धु पाठक चिल्लाते रह जाते हैं। अपनी नेकी के बावजूद उन्हें एक रात हवालात में काटनी पडती है। इधर रग्घू पान वाले की अकड़ और उसका विरोध नाकामयाब हो जाता है। दीनबन्धु पाठक की गिरफ्तारी और बेवजह रग्घू पानवाले की पीटाई की घटना को लेकर

॥1॥ भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" पृ.120

युगचेतना के प्रधान सम्पादक विश्वम्भर उपाध्याय एक कड़ा लेख लिखते हैं। जिसमें पुलिस के अत्याचारों और अनाचारों की निन्दा करते हैं। उसका बदला पुलिसवाले जब दीनबन्धु पाठक के घर बर्तनों की चोरी होती हैं तब लेते हैं। दीनबन्धु पाठक थाने में बर्तनों के चोरी की रपट लिखवाते हैं और पुलिसवाले चोर की तलाश करने का नाटक करते हैं। कुछ दिनों बाद घीसा-पीटा अलम्यूनियम का लोटा कोर्ट में पेश करके उनका मजाक उड़ाया जाता है।

वर्तमान युग झूठे, फरेबी, स्वार्थी लोगों का युग है। इसमें रग्घू और दीनबंधु पाठक जैसे सच्चे, इमानदार, स्वाभिमानी लोगों को अपने अधिकार के मद में अन्धे, बेईमान लोगों से संघर्ष कर के भी हारना पड़ता है। अत: स्पष्ट है कि, बेईमान, स्वार्थी लोगों सबल बन बैठे हैं और उन्होंने इमानदार लोगों को निर्बल बना दिया है।

स्त्री पुरुष संघर्ष

हम देखते हैं कि, भारतीय नारी सदियों से परम्परागत बंधनों में जकड़ी हुई है। आज नारी शिक्षा के प्रसाद से, समाजसुधारकों के नारी सुधार विषयक कार्यों से नारी अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गयी है। साथ ही पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के सम्पर्क में आने से उसकी डरपोक वृत्ति जाती रही है। पहले तो वह पुरुषों के अत्याचार चुपचाप सह लेती थी, लेकिन अब जागृत बनीत्र नारी पुरुषों के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने लगी है। यहाँ तक कि, पुरुषों पर अत्याचार करने लगी है। अत: स्त्री पुरुष का मुख्य कारण अनादि काल से स्त्रीपर किये गये पुरुषों के अत्याचार तथा नारी जागृती है। जिसका वर्णन भगवतीचरण वर्मा की निम्नलिखीत कहानियों में मिलता है।

"उत्तरदायित्व"

कहानी की नायिका "शीला" धनी बाप की बेटी है। कालेज में पढ़ती है और अपने इशारोंपर नवयुवकों को नचाती रहती है। उनसे खिलौना की तरह खेलती हैं। लेकिन प्यार नहीं करती। उसके प्यार में दिवाना गरीब भाऊक युवक जगदीश, उसके शादी से इन्कार कर देनेपर आत्महत्या कर लेता है। जगदीश की आत्महत्या से शीला को जरा भी दु:ख नहीं होता, बल्कि वह एक धनी युवक के साथ अपनी शादी तय करती है। जगदीश का मित्र रंजन शीला की शादी की सूचना पाकर उसके घर जाता है और

उसे पूछता है।-

" अगर तुम्हें जगदीश से शादी नहीं करनी थी, तो उससे प्यार का नाटक क्यों किया? आगे वह कहता है- मनुष्य के भविष्य से उसके प्राणों से खेलना कितना भयानक और अमानुषिक है? रंजन के सवालपर शीला जो जबाब देती है उसमें स्त्री-पुरुष संघर्ष के दर्शन होते हैं। शीला एक पैशाचिक कर्कशता युक्त हँसी हसती हुई कहती है-

" मनुष्य के भविष्य से खेलना, मनुष्य के प्राणों से खेलना। इसपर आपको आश्चर्य होता है, पर मैं आपसे पूछती हूँ, कौन उनसे नहीं खेलता, क्या पुरुष स्त्री के प्राणों से नहीं खेलता, क्या वह स्त्री को गुलाम बनाकर नहीं रखना चाहता? मिस्टर रंजन, अपने समाज में आप वेश्याओं का स्थान तो जानते ही होंगे? ये वश्याएँ है कौन? ये वेश्याएँ भी कभी सच्चरित्र युवतियाँ थीं, पर इनमें से प्रत्येक के साथ किसी न किसी पुरुष ने सबसे पहले खेला है। उस पहले खेल से सन्तुष्ट न होकर पुरुष जाती ने उनके जीवन भर के लिए उन्हें खिलौना बना लिया है और भी आप सुनेंगे यह जो नवयुवकों की भीड़ मेरे दरवाजे हाजिरी बजाती है, इनमें से अधिकांश मुझे खिलौना बनाकर खेलना चाहते हैं।" ।।।

अत: नारी को पतिता बनाने में उसे संघर्षमय जीवन यापन करने के लिए पुरुषों ने ही बाध्य किया है। कुछ स्त्रियों ने पुरुषों के अत्याचार चुपचाप सहे और कुछ शीला जैसी नारियों ने पाश्चात्य सभ्यता को अपनाकर उनके अत्याचार का बदला लिया।

"बाहर भीतर"

कहानी की चार नारियाँ कमलादेवी, सुशीलादेवी, भाग्यवती देवी और मानिनी देवी, पढ़ी लिखी होने के साथ ही पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित दिखाई देती हैं। पुरुषों के लिए उनके मन में आदर की भावना बिल्कुल नहीं है। उनके कथनों में तथा विचारों में स्त्री पुरुष संघर्ष के मूल दिखाई देते हैं।

सुशीला देवी के विचार से पुरुषों ने स्त्री को दासी बनाकर रखा है। उसका कार्यक्षेत्र घर की चार दिवारी और बच्चों तक ही सीमित कर दिया है। अत: पढ़ी लिखी स्त्रियों को शादी करके पुरुषों की दासी नहीं बनना चाहिए।

।।। भगवतीचरण वर्मा - "इन्स्टालमेन्ट" - पृ.97

भाग्यवती देवी कहती है-

"मैं तो कल्पना नहीं कर सकती कि, किस प्रकार एक स्त्री जिसके आत्मा है, अत्याचारी पुरुष जाति की दासी बनकर रह सकती है। पुरुष अत्याचारी हैं खुदगर्ज, है। पति और पत्नी। कितना व्यंग्यात्मक नामकरण है। पुरुष पति है, स्वामी है। मालिक है। और स्त्री पत्नी है, दासी है, गुलाम कितना अत्याचार औरहम स्त्रियाँ इसे सहर्ष स्वीकार भी करती हैं। हमारा कितना पतन है। हमें तो चाहिए कि, हम इन पुरुषों का अपमान करें, इन्हें ठुकरावें। सदियों तक अविद्या के बलपर इन्होंने हमें गुलाम बनायें रखा है, अब हमारी बारी है। हमें इनको बतला देना चाहिए कि, हम इनके बराबर हैं। बराबर ही क्यों, हमश्रेष्ठ हैं, पुरुष पशु है, स्त्री उच्चभावना प्रधान होने के कारण देवी है।" ।1।

अनादी काल से पुरुषों ने स्त्री पर ढाये जुलमों ने स्त्री पुरुष संघर्ष का बीज बोया है।

।1।' भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" - पृ. 80-81

:: नारी-चित्रण ::

।1। आदर्श भारतीय नारी :

हिन्दू नारी की श्रेष्ठता सर्वमान्य है। आदर्श हिन्दू नारी का चित्रण वर्माजी ने अपनी कहानियों में किया है। हिन्दू नारी नीति-मूल्यों के पालन में विश्वास करती है, कोमल हृदय की होती है, माया-ममता की जीति-जागती तसवीर होती है। उसकी पवित्रता, सतीत्व, त्याग, ममता आदि गुणों के दर्शन भगवतीबाबू की निम्नलिखित कहानियों में होते हैं।

"मेज की तसवीर"

भारतीय नारी के सतीत्व और सीधेपन का संकेत इसमें मिलता है। कहानी के नायक "रामनारायण" की पत्नी आदर्श हिन्दू नारी का प्रतीक दिखाई देती है। अपने पति की प्रेयसी "मनोरमा" की तसवीर हमेशा पति की मेजपर रखी देखकर भी चुप रहती है कोई आपत्ती नहीं उठाती। वह अत्यंत सीधी और शान्त स्वभाव की नारी है। रामनारायण स्वयं उसके बारे में कहता है-

" मेरी स्त्री को देखो- वह सारा किस्सा जानते हुए भी कभी मेरी मेज पर मनोरमा के चित्र के रखे रहने पर विरोध नहीं करती उफ। मेरी स्त्री कितनी सीधी है - वह देवी है।"।1।

"विवशता"

प्रस्तुत कहानी की नायिका "लीला" का पति" रामकिशोर एक अय्याशी गैरजिम्मेदार आदमी है। सामर्थ्य से बाहर खर्च करता है और फिर अपनी खोखली होती जा रही स्थिति को भूला देने के लिए शराब पीता है। उसपर बहुत अधिक कर्ज लदा है। अपनी इस स्थिति से लीला दुःखी अवश्य है फिर भी अपने बचपन का दोस्त और सहपाठी रमेश के उसके घर आने से वह, नायिका भी विचलित नहीं होती। रमेश के पूछने पर वह अपनी स्थिति का, अपने दुःख का, पति की हरकतों का बयान करती है। यह सब सुनकर रमेश उसे पूछ बैठता है कि--

" क्या तुम बाबू रामकिशोर से प्रेम करती हो।"2

।1। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 14-15
।2। --"-- वहीं --"-- पृ. 21

रमेश के इस प्रश्न पर लीला को बहुत आश्चर्य होता है, मानों रमेश ने कोई बहुत अनुचित बात कही हो - वह कहती है -

" हाँ रमेश! बहुत अधिक इतना अधिक कि जिसकी तुम कल्पना तक न कर सकोगे।" ‖1‖

एक दिन लीला के पति रामकिशोर को अपनी हरकतों से गिरफ्तार कर लिया जाता है, उसके उपर दो सौ रुपये की डिग्री होती है। लीला अपने पति को बचाने के लिए रमेश के बैग में से दो सौ रुपयों की चोरी करती है और उसे छुड़ा लेती है। अपने जीवन में चोरी जैसा घृणित काम वह अपने पति के लिए करती है। बाद में रमेश से अपने इस कृत्य के लिए गिड़गिड़ाकर माफी माँगती है, -
" रमेश! आज दिन भर मैं रोई हूँ, और न जाने कब तक मुझे रोना पड़ेगा। पर मैं क्या करूँ, मैं कितनी विवश हूँ। वे मेरे सबकुछ हैं - अपने सारे जेवर मैंने बेच दिये, अब मैं कंगाल हो गई हूँ। लेकिन भगवान ने मुझे इसके आगे भेजा - मुझे आज चोरी भी करनी पड़ी। रमेश, तुमसे मेरी यही प्रार्थना है कि तुम मुझे क्षमा करो और हमारे लिए भगवान से प्रार्थना करो।" ‖2‖

अतः इतना होने के बावजूद भी वह अपने पति को अपना सबकुछ ही नहीं बल्कि अभिन्न मानती है इसीलिए रमेश से कहती है, हमारे लिए भगवान से प्रार्थना करो। पति के सामने उसे अपने जेवर या सम्पत्ति की कोई पर्वा नही है। अपना सबकुछ उसने अपने पति पर लूटाकर वह कंगाल हो गयी है। अपनी कंगाल अवस्था में पति को बचाने के लिए चोरी भी करती है।

लिला सतीत्व, त्याग, दया, प्रेम की प्रतिमूर्ति है। वह एक आदर्श हिन्दू नारी है।

"एक विचित्र चक्कर है"

कहानी की नायिका "कमला" एक अशिक्षित युवती है। दस वर्ष की आयु में उसका विवाह हो जाता है और अठारह वर्ष की आयु में वह विधवा हो जाती है। विधवा हो जाने पर वह अपने मायके आकर रहने लगती है। कहानी का नायक "देवेन्द्र" उसका बचपन का साथी और पड़ोसी है। उसके मायके आ जाने के बाद फिर दोनों

‖1‖ भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ.21
‖2‖ --"-- वही --"-- पृ.22-23

की मुलाकातें होने लगती हैं। जवानी उन्हें एक दूसरे की तरफ आकर्षित करती है। दोनों में प्यार हो जाता है। दोनों एक दूसरे से जान से ज्यादा प्यार करने लगते हैं। कमला को कुछ ही दिनों में यह अहसास होने लगता है कि उससे बड़ी भूल हुई है। उसका मन प्यार के लिए उसे अनुमति नहीं देता। उसे लगता है, विधवा होने के कारण किसी से प्यार करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। वह सोचती है कि, उसे विधवा धर्म का पालन करना चाहिए। उसे यकिन है कि, प्यार में वासना का न होना नामुमकिन है। इसलिए वह अपने दिल पर पत्थर रखकर देवेन्द्र से दूर रहने के लिए फिर अपने ससुराल चली जाती है। देवेन्द्र को भी मिलने से या खत लिखने से मना कर देती है। ससुराल जाकर वह बीमार पड़ती है। अपने लिए दवा-पानी भी नहीं करती। प्यार की अगनी में जलकर दस बरस के अन्दर ही उसका देहान्त हो जाता है। मरने से पहले वह अपनी चार लाख की जायदाद देवेन्द्र के नाम लिख जाती है। कमला की बातों से और आप-बीती से उसकी सात्विकता, सत्शीलता, धार्मिकता, कर्तव्यपरायणता तथा संयमी वृत्ति आदि गुण दिखाई देते हैं। वह अपनी जान देकर अपना कर्तव्य, धर्म और प्यार अन्ततक निभाती है।

पहले अशिक्षा के कारण नारी परम्परा से चली आयी बातोंपर बिना उसकी सत्यता परखे विश्वास कर लेती थी। कमला भी अशिक्षित होने के कारण परम्परागत विधवा धर्म को मानती है और अपने आप को प्यार के अधिकार से वंचित रखकर अपना जीवन बली चढ़ा देती है।

"राख और चिनगारी"

कहानी की नायिका "गीता" अपनी माँ, विधवा भाभी और भांजों की परवरीश के लिये नौकरी करती है। उनका पालन-पोषण ठीक तरह से हो जाय इसलिए वह अपनी इच्छा-अकांक्षाओं को दूर रखकर एकदम सादगी भरा जीवन व्यतीत करती है। लेकिन अचानक उसके जीवन में एक ऐसा मोड़ आता है किउसका जीवन ही बदल जाता है। उसे रमेश से प्यार हो जाता है। वह भविष्य के सुख-स्वप्न सजाती है। उसका विवाह रमेश के साथ तय हो जाता है। लेकिन जब वह अपने सुख-सपनों से जागकर वर्तमान वास्तविकता को देखती है तो उसे अनाथ भांजे, विधवा भाभी और बूढ़ी माँ दिखाई देती है और भाई को मरते समय दिया हुआ वचन याद आता है--

"भैया, तुम इसकी चिन्ता मत करों। मैं हूँ तुम्हारी बहन। और मैं तुम्हें वचन देती हू कि इन्हें कष्ट न होने पायेगा।" ।1।

यह सब याद आते ही वह एक निर्धार कर लेती है और अपने सुख-सपनों से मुँह मोड़ लेती है। वह कहती है--

"नहीं- नहीं- नहीं। मैं अपने से लडूंगी मैं अपने उपर विजय पाऊँगी मैं खुदगर्जी से उपर उठूँगी। मैं उस विश्वास की रक्षा करूंगी, जो दूसरोंने मेरे ऊपर सौंपा है।" ।2।

अत: वह अपने दिलपर पत्थर रखकर रमेश से शादी के लिए इन्कार कर देती है और उससे दूर चली जाती है। अपने निसहाय घरवालों के लिए वह अपनी जिन्दगी कुर्बान कर देती हैं।

उपर्युक्त कहानियों में चित्रित नारीयाँ भारत की आदर्श संस्कृति की प्रतीक हैं। अपने आप को मिटाकर त्यागमय जीवन व्यतीत करते हुए वे अपने कर्तव्यों का पालन करती है। पति को परमेश्वर मानती हैं।

।2। नारी की साहसी वृत्ति और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता:-

वर्तमान युग में नारी साहसी और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बन गयी है। वह अपने उपर किये गये जुलमों को अपना नसीब समझकर चुप नहीं रहती बल्कि या तो विरोध करती है या अपने आप ही उन जुलमों से बचने का रास्ता निकालकर अपनी जिन्दगी संवारती है। "दिल का दौरा" कहानी की 'दुर्गा' और समझौता कहानी की 'रत्नप्रभा' ऐसी ही नारीयाँ हैं।

"दिल का दौरा"

इस कहानी की नायिका "दुर्गा" अठारह बरस की गठे हुए बदन की सुन्दर देहाती युवती है। उसकी शादी पैतालिस वर्षीय रामदीन से हो जाती है। रामदीन एक अमीर व्यक्ति, परिवहन विभाग के सचिव गौरमोहन ज्ञानी का नौकर है।

।1। भगवतीचरण वर्मा -"मेरी प्रिय कहानियाँ" पृ.116
।2। --"-- वहीं --"-- पृ.126

ज्ञानीजी की उमर पचपन वर्ष की है। वे एक अय्याशी किस्म के आदमी हैं। दुर्गा को देखते ही उनके मन में वासना की अग्नी जाग उठती है। वे दुर्गा को साड़ियाँ खरिदने के लिए रुपये देते हैं। एक दिन रात रामदीन को सिनेमा देखने के लिए बल्दी छोड़ देते हैं। रामदीन भी ज्ञानीजी के दुर्गा को अपनी वासना का शिकार बनाने के हेतू को जान जाता है, लेकिन कोई आपत्ती नहीं उठाता बल्कि कहता है-

"मुला सरकार कुछ सावधानी बरतें, थोड़ी-सी हठछुट आय।" [1]

रामदीन के जाने के बाद जब दुर्गा कमरे की सफाई करने के लिए बँगले में आती है, तो ज्ञानीजी उसे अपने कमरे में ले जाने के लिए उसका हाथ पकड़ते हैं। दुर्गा अपने बाये हाथ से एक तमाचा कसकर ज्ञानीजी को गाल पर मारती है और दौड़ती हुई अपने घर आती है। किवाड़ बन्द करने से पहले ही ज्ञानीजी दौड़ते हुए आते है। और अन्दर घुस जाते हैं। दुर्गा भयभीत हो जाती है। ज्ञानीजी कहते हैं कि, रामदीन तुझे मेरे हाथ सौंप गया है अब तुझे कोई नहीं बचा सकता। इतने में दुर्गा की नजर पास ही पड़ी कुल्हाडी पर पड़ती है। वह कुल्हाड़ी हाथ में लेकर कहती है-

"साहेब, एक भेड़िया जंगल में मार चुकी हन, अब दूसर भेड़िया सहर माँ मार रही हन।" [2]

इतना कहकर वह कुल्हाड़ी तानकर ज्ञानीजी की तरफ बढ़ने लगती है, यह देखकर ज्ञानी भयभीत हो जाते हैं। उन्हें लगता है साक्षात चण्डी उनके प्राण लेने आयी है। उन्हें अपने पैरों की शक्ति जाती महसूस होती है और वे दुर्गा के पैरोंपर गिरकर उसकी क्षमा माँगते हैं।

दुर्गा पैतालिस बरस उमरवाले रामदीन के साथ रहके अपनी जवानी अपनी उमंगे बर्बाद नहीं करना चाहती, फिर भी मजबूरन वह उसके साथ रहती है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि रामदीन ने जानबूझकर उसे गौरमोहन ज्ञानी जैसे भेड़िये के हवाले किया है, तब अगले दिन जोगेश्वर नाम के जवान नौकर के साथ वह अपना कपड़ा, जेवर और रुपयाँ लेकर भाग जाती है। इसप्रकार दुर्गा अपने ऊपर किए अन्याय को निर्भयता से दूर करती है। गौरमोहन ज्ञानी की जुल्म-जबरदस्ती के सामने वह अपना सर नहीं झुकाती और ना ही अपनी इज्जत निलाम होने देती है, बल्कि उन्हें ही अपने पैर छूने के लिए बाध्य करती है।

।1। भगवतीचरण वर्मा - "मोर्चाबन्दी" - पृ.114
।2। --"-- वही --"-- पृ. 115

"समझौता"

कहानी की नायिका 'रत्नप्रभा' पतिपर क्रोधित होकर मयके चली जाती है। उसके क्रोध का कारण यह है कि, उसका पति अपने व्यवसाय के सिलसिले में कृषि आयुक्त की प्राइवेट सेक्रेटरी को पटाने के लिए एक सारी लाता है, जिसे वह तोफे के रूप में देनेवाला है। साथ में एक खत भी लिखा है। रत्नप्रभा का पति कवि किस्म का आदमी होने के कारण उसने उस खत में प्राइवेट सेक्रेटरी की खूबसूरती का बखान भी किया है। इसलिए वह खत प्रेम पत्र लगता है।

वह खत और सारी संयोग से रत्नप्रभा के हाथ लगती है। उसे पति पर क्रोध आता है और वह गुस्से से मयके चली जाती है। पति जब उसे समझाने आता है, तो वह कुछ भी सुनने के लिए तैयार नही होती बल्कि तलाक लेने तक की बात करती है। पति के लगातार अनुनय करनेपर, क्षमा मांगनेपर, गिड़गिड़ाने पर वह अपने पति के सामने कुछ कड़ी शर्तें रखती है और उन सब शर्तों को पतिव्दारा मंजूर करने के बाद उनपर उसके हस्ताक्षर लेकर ही वह पति के साथ आती है।

अतः स्पष्ट है कि, वर्तमान युग में नारी की स्थिति काफी बदल गई है। अब वह पहले की तरह विवश नहीं है, अन्याय के विरुध्द लड़ सकती है। पहले उसने अपने अशिक्षा, अंधश्रध्दा तथा समाज के कड़े बन्धनों के कारण अपने चारोओर कर्तव्य सतीत्व, धर्म की आडम्बरयुक्त दिवारे खड़ी कर रखी थीं। पति के अत्याचार वह चुपचाप सह लेती थी, क्योंकि इसे वह अपना धर्म समझती थी। लेकिन अब नारी में काफी परिवर्तन आ गया है। वह जागृत हो गई है। अपने धर्म, कर्तव्य आदि का पालन वह अवश्य करती है पर आँखे खुली रखके। वह अपने उपर हुआ अन्याय बरदाश्त नहीं करती। स्वाभिमान से जीती है।

3। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित साहसी और उच्छृंखल नारी :-

अंग्रेजों की संस्कृति, उनकी रहन सहन और विचारों का प्रभाव कुछ अंश तक भारतीय समाज पर अवश्य पड़ा। नारीयाँ भी इसके लिए अपवाद नहीं रही। इन नारीयों ने परम्परा से चले आये कुछ बंधनों को तोड़कर वे स्वतंत्रता से अपना जीवन-यापन करने का प्रयत्न करने लगी। चार-दिवारी में बंद रहनेवाली, पति को परमेश्वर

माननेवाली भावुक निर्बल नारी अब नहीं रही। नारीयों में यह परिवर्तन पाश्चात संस्कृति के सम्पर्क, शिक्षा और भारतीय समाजसुधारकों के स्त्री, सुधार कार्यों के कारण हुआ। जिसके कारण नारी अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गयी। लेकिन उसने भारतीय सभ्यता-संस्कृति का पूर्ण रूप से उल्लंघन नहीं किया। भगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ पढ़नेपर यह मालूम होता है कि, शिक्षित नारी के प्रति उनकी दृष्टि अनुदार रही है। अपनी कहानियों में उन्होंने शिक्षित नारी को काफी गिरा -या है। उसे पाश्चात संस्कृति का तथा उच्छृंखलता की प्रतिक बनाया है। साथ ही उसे धनलिप्सु भी दिखाया है। उनकी निम्नलिखित कहानियों में इसका चित्रण मिलता है।

"उत्तरदायित्व"

कहानी की नायिका 'शीला' पढ़ी-लिखी अमीर बाप की बेटी है। वह अनेक नवयुवकों से प्यार का नाटक करती है और उन नवयुवकोंने दिये हुए किमती तोफे बेझिझक स्वीकार करती है। जगदीश नाम का एक भावुक गरीब युवक उससे सच्चा प्यार करता है। उसके साथ वह प्यार का नाटक करती है। जगदीश जब उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखता है तो वह इन्कार कर देती है, इससे जगदिश का दिल टूट जाता है और वह आत्महत्या कर लेता है। इस बात का शीलापर कोई असर नहीं होता। वह उसे पागल करार देती है और बाद में एक धनी युवक से अपनी शादी रचाती है। उसके विचार भी उसकी कृति की तरह उच्छृंखल और निर्दयता से भरे हुए हैं। जैसे--

" अपने चारो ओर प्रणय भिखारियों की भीड़ देखकर मुझे बुरा क्यों लगे? मुझे अपनी सुन्दरता पर अपनी मोहिनी शक्ति पर गर्व होता है।" ।1।

"मुझे केवल इसमें सुख मिलता है कि, वे मेरी पूजा करें, मेरे इशारोंपर नाचें कि मैं उन्हे अपना खिलौना बनाकर खेलूँ। हम सब खेलना चाहते हैं, जीवन स्वंय ही एक खेल है। दु:खी वही है जो अच्छी तरह से खेल नहीं सकता। मैं अपने खिलौनों पर यह सत्य प्रकट कर के अपने खेल को बिगाड़ूँ क्यों?" ।2।

।1। भगवतीचरण वर्मा - "इन्स्टालमेन्ट" - पृ.96
।2। --"-- वहीं --"-- पृ.96-97

"प्रेजेन्ट्स"

कहानी की नायिका "शशीबाला देवी" पढ़ी - लिखी , तीस वर्षीय अविवाहित नारी है। एक गर्ल्स स्कूल में प्रधान अध्यापिका है। उसे संध्या के समय बगिचे में घूमने की आदत है। पड़ोस में हाल ही में रहने के लिये आये कम्पनी के एक ब्रांच मैनेजर "परमेश्वरी" से उसकी बगिचे में भेंट होती रहती है। जब वह महसूस करती है कि,परमेश्वरी चाहते हुए भी उससे पहचान प्राप्त करने में शर्माता है, तब वह एक दिन अपने पीछे उसे आते देखकर जान-बूझकर अपना रूमाल गिराती हैं, और उसे बात शुरू करने का मौका देती है। परमेश्वरी जब उसे रूमाल उठाकर देता है तो वह उसके साथ बेझिझक बातें करने लगती है। देखिए-

"अच्छा तो आप मेरे पड़ोसी है, और यों कहना चाहिए कि निकटतम पड़ोसी है। ... यह तो बड़े मजे की बात है, इतना निकट होते हुए भी हम लोगों में अभीतक परीचय नहीं हुआ।" [1]

परमेश्वरी कहता है कि,आप स्त्री है इसलिए आपके यहाँ आने का साहस नहीं हुआ। इस बातपर शशीबाला खिलखिलाकर हँस पड़ती है और कहती है-

"अच्छा तो आप स्त्रियों से इतना अधिक डरते हैं। लेकिन स्त्रियों से डरने का कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता। अब अगर आप अपने भय के भूत को भगा सके तो कभी मेरे यहा आइये। आपसे सच कहती हूँ स्त्री बड़ी निर्बल होती है और साथ ही बड़ी कोमल। उससे डरना बड़ी भारी भूल है।" [2]

गपशप के बाद पहली ही भेंट में वह परमेश्वरी को अपने घर आमंत्रित करती है। इसी तरह वह अपने सम्पर्क में आये हुए हर पुरूष से बेझिझक संबंध रखती है और उनके दिये हुए तोफे स्वीकार करती रहती है। अबतक वह सतानवे पुरूषों से संबंध रख चुकी है। शुरू-शुरू में हर पुरूष को वह पति के रूप में देखती रही लेकिन उनमें से कोई भी उससे शादी करने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब वह केवल उनसे शरीर सुख लेती रही। यह केवल पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का नतिजा है।

---

[1] भगवतीचरण वर्मा - "इन्स्टालमेन्ट" पृ. 6
[2] --"-- वहीं --"-- पृ. 6-7

"बाहर भीतर"

कहानी की चार नारियाँ भाग्यवती देवी, सुशीलादेवी, मानिनीदेवी, और कमलादेवी पढ़ी लिखी है। इन चारोंपर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। उनमें से हर एक ने अपने पति को किसी न किसी वजह से छोड़ा है और स्वतंत्रता से बंधन - रहित जीवन-यापन कर रही है। अपनी सहेली निर्मला को भी वे शादी करने से परावृत्त करना चाहती है। भारतीय- विवाह भी वे शादी करने से परावृत्त करना चाहती है। भारतीय-विवाह संस्था में उन्हें तनिक भी विश्वास नहीं है। शादी करना याने पुरुषों की गुलामी करना, दासी बनकर जीना, बच्चे जनना, चार दिवारी में बन्द रहना उनकी धारणाएँ है। अनपढ़ पशुतुल्य स्त्रियों का यह काम है पढ़ी-लिखि स्त्रियों का नहीं। उनका कहना है कि, स्त्रियों को चाहिए पुरुषों का अपमान करें, उन्हें ठुकरावें, इनको बतला दें कि, हम भी इनके बराबर हैं। बराबर ही क्यों हम उनसे श्रेष्ठ हैं। सदियों से पुरुषोंने अविद्या के बलपर स्त्रियों को गुलाम बनाये रखा लेकिन अब यह नहीं होना चाहिए। इसके भी आगे उनका कथन है कि, विवाह करके एक पुरुष की दासी बनने की अपेक्षा दस पुरुषों को गुलाम बनाकर उनसे देवी की तरह अपनी पूजा करवा लेनी चाहिए, शनी की तरह उनपर अधिकार जमाना चाहिए। स्वयं बंधन में बंधना बड़ी भारी भूल हैं। खाओ, पियो और खेलो। वाली नीति को ये सब अपनाने के लिए कहती है।

उपर्युक्त सभी बातों से उन चारों नारीयों परपाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

"बॉय! एक पेग और"

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'माधवी' बहुत ही सुन्दर है, जो बी.ए. में पढ़ती है और नायक 'विश्वकान्त' एम.ए. में पढ़ता है जो एक अमीर बाप का इकलौता बेटा है। वह माधवी से जी जान से प्यार करता है। अपने पिता की मर्जी के खिलाफ वह माधवी से शादी करना चाहता है। शादी की तारीख भी तय हो जाती है। उसके दो दिन पहले ही विश्वकान्त के पिता का तार आता है कि, उनकी सब सम्पत्ति निलाम हो गयी है और वे बहुत ही अस्वस्थ हैं। यह बात समझने पर माधवी के चेहरे का रंग उड़ जाता है। विश्वकान्त उससे इतना प्यार

करता है कि शादी की तारीख टालकर वह पिता के पास भी नहीं जाना चाहता। लेकिन माधवी उसे समझा-बुझाकर गाँव भेज देती है। उसके जाने के बाद उसके मित्र एक बिगड़े हुए रईस के बेटे निर्मलचन्द से विवाह कर लेती हैं।

विश्वकान्त के गाँव से वापस आने के बाद माधवी उसे कहती है-

" विश्व! क्षमा करना! मेरे पिता ने निर्मल के साथ मेरा विवाह कर दिया। मैं क्या करूँ, पर विवाह से क्या होता है? हम दोनों बराबर प्रेम करते रहेंगे। "!!

यहाँ माधवी की लोभी वृत्ति के साथ ही उसकी चरित्र-हिनता के दर्शन होते हैं।

भारतीय नारी विनयशीलता और सभ्यता की प्रतिक हैलेकिन पाश्चात्य शिक्षा सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से कहीं कहीं नारियों की विनय-शीलता लुप्त होती नजर आती है। वह अपने धर्म, कर्तव्य के प्रति उदासिन दिखाई देती है। इसी कारण पराये पुरुषों से खुलकर बातें करने में, एक से अधिक पुरुषोंसे संबंध स्थापित करने में उसे कोई झिझक नहीं महसूस होती। ऐसी नारियाँ भारतीय संस्कृति पर लगा एक दाग है। फिर भी शिक्षा प्राप्त करने के कारण भारतीय नारी अधिकारों के प्रति जागरूक और स्वावलंबी बन गयी है।

!! भगवतीचरण वर्मा - "इन्स्टालमेन्ट" - पृ.116

"धर्म, अंधश्रध्दा, रूढ़ी परम्परा"

धर्म और समाज का अटूट नाता है। समाज के सभी अंगोपर धर्म का प्रभाव पड़ता है। धर्म व्यक्तिगत सामाजिक जीवन का आधार है। धर्म इन्सान को संयमित रखता है। उसमें श्रध्दा, विश्वास के साथ आचार संहिता का भी समावेश होता है। आदमी के सामने पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक की धारणाएँ धर्म के कारण उभरती है और इसी कारण वह दुराचरण से बचने का प्रयत्न करता रहता है। धर्म के इन लाभों के अतिरिक्त उसमें कुछ दोष भी है जिसने इसे खोखला बनाया है।

रूढ़िवादी धर्म में व्यक्ति को आडम्बरों और विभिन्न कर्मकाण्डो के माध्यम से लूटा जा रहा है जिसके कारण धर्म का पवित्र पथ कमजोर होता जा रहा है, उसमें विकृतियाँ आती जा रही हैं। ब्राह्मन, पुरोहित जैसे धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर जनता को लूटते हैं। और अपनी झोलियाँ भरते रहते हैं। धर्मस्थानों की पवित्रता नष्ट होती जारही है। शिक्षा के कारण धर्म के पाखण्डीपन को आदमी जान गया है। धर्म के प्रति होनेवाला विश्वास कम होता जा रहा है। फिर भी व्यक्ति और समाज पर धर्म का प्रभाव दिखाई देता है। धर्म से सम्बन्धित अथवा असम्बधिन्त श्रध्दा, विश्वास, धारणाएँ जिन्हें वैज्ञानिक पुष्टि नहीं दी जा सकती उन्हें अंधश्रध्दा या अंधविश्वास कहते हैं। स्वर्ग-नरक, भूत-प्रेत, गंगास्नान, इश्वरीय कोप, उसका प्रायश्चित आदि विषयक अनेक अंधविश्वास समाज में प्रचलित हैं। वर्तमान समाज में इनका खोखलापन स्पष्ट होता जा रहा है फिर भी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है।

"रूढ़ी"- मानक हिन्दी कोश के अनुसार

"परम्परा से चली आई हुई कोई ऐसी चाल या प्रथा जिसे साधारण लोग मानते हो अथवा जिसका पालन लोक में होता हो उसे रूढ़ी कहते हैं।"

हमारे समाज में कुछ रूढ़ियाँ बरसों से चली आ रही हैं। बुजुर्गों से चली आयी बातों को वैसे ही आगे चलाना, इसे लोग अपना आदय कर्तव्य समझते हैं और फिर यही बातें रूढ़ी में बदल जाती हैं। लेकिन जब रूढ़ी परम्पराओंके पालन में श्रध्दा कम हो जाती है, सिर्फ व्यवहार रह जाता है तब ये बातें आडम्बर बन जाती हैं। समाज में इष्ट-अनिष्ट दोनों प्रकार की रूढ़ियाँ पायी जाती है।

उपर्युक्त सभी बातों की झलकें वर्माजी की निम्नलिखित कहानियों में मिलती हैं।

"दो पहलू"

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने माघ मेले का वर्णन दिखाकर लोगों में फैली हुई अन्धश्रध्दा और धर्माडम्बर का चित्रण किया है। तीर्थराज प्रयाग में माघ महिने में मेला लगता है। लोगों की धारणा है कि वहाँ जानेसे और स्नान करनेसे पुण्य कमाया जा सकता है। इसी कारण बहुत बड़ी संख्या में लोग इस मेले में उपस्थित रहते हैं। अपना पेट काटकर औरकर्ज निकालकर ऐसे तीर्थस्थानों की यात्रा पुण्य कमाने के लिए करते हैं। देखिए-

"कर्ज काढ़कर और पेट काटकर एकत्रित रुपयों का उपयोग करके पुण्य कमाने के लिए आये हुए भक्तों का समूह उन भिखारियों के दर्शन करने के कारण स्वर्ग का अधिकारी बनने के लिए उमड़ा पड़ रहा था। उस भीड़ में बूढ़े थे, जवान थे, स्त्रियाँ थीं बच्चे थे। "।1।

इसप्रकार ये लोग वहाँ जाकर अपना पवित्र धार्मिक हेतु भूलकर अन्य बातों की ओर आकर्षित होते हैं। माघ मेले में आये हुए लोग हाथी, ऊँट और घोडोंपर सवार गद्दीदार भिखारियों के जलूस की ओर आकर्षित हो जाते हैं। इस बात का मार्मिक चित्रण वर्माजी ने उपर्युक्त परिच्छेद में किया है।

लोगों की चंचल मनोवृत्ति के कारण श्रध्दा, धर्म, पुण्य जैसी बातें दुर्लभ हो गयी हैं। सिर्फ दिखावे की भावना रह गई है। परम्परा से चली आयी तीर्थराज प्रयाग के माघ मेले की श्रेष्ठता और पवित्रता के कारण लोग वहाँ तक पहुँचे तो जाते हैं लेकिन उनकी श्रध्दा कम होती जा रही है। तीर्थराज प्रयाग का माघम मेला धर्म का प्रतीक होने के साथ-साथ धर्माडम्बर का रूप बनकर रह गया हैं।

"प्रायश्चित्त"

स्वतंत्रतापूर्व काल में दिखाई देनेवाली अन्धश्रध्दा और धर्म का आडम्बर

।1। भगवतीचरण वर्मा -"दो बाँके" - पृ. 12

युक्त रूप का मुख्य कारण अशिक्षा और अज्ञान था। लोगों के अज्ञान का लाभ पण्डित-पुरोहित जैसे मुट्ठीभर पढ़े-लिखे लोग उठाते थे और उन्हें बुरी तरह लुटते थे।

प्रस्तुत कहानी में बिल्ली की हत्या की घटना को लेकर इस बात का मार्मिक एवं मनोरंजक चित्रण प्रस्तुत किया है-

बिल्ली की हत्या पुरातन काल से एक अशुभ घटना मानी जाती है। उसे इन्सान की हत्या के बराबर समझा जाता है।

कहानी की नायिका रामू की "बहू" के हाथ से बिल्ली की हत्या हो जानेपर उसकी सास, घरकी नौकरानियाँ और पास-पड़ोस की औरते चिंतित हो जाती हैं। उनकी चिन्ता, अज्ञान और अंधश्रध्दा निम्नलिखित वार्तालाप से स्पष्ट होती है। -

" महरी बोली - अरे राम! बिल्ली तो मर गई, माँ जी बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बहुत बुरा हुआ।

मिसरानी बोली- माँ जी बिल्ली की हत्या आदमी की हत्या के बराबर है, हम तो रसोई न बनावेंगी जबतक बहू के सिर । हत्या रहेगी।

सासजी बोली - हाँ ठीक तो कहती हो, अब जबतक बहू के सर से हत्या न उतर जाय, तब तक न कोई पानी पी सकता है न खाना खा सकता है। बहू यह क्या कर डाला।" [1]

फिर महरी जाकर पण्डित परमसुख को बुला लाती है। पण्डित पंचांग देखकर कहता है-

" हरे कृष्ण! हरे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ। प्रातःकाल ब्राम्ह-मुहूर्त में बिल्ली की हत्या! घोर कुम्भीपाक नरक का विधान है! रामू की माँ यह तो बड़ा बुरा हुआ।" [2]

इसप्रकार पण्डित परमसुख रामू की माँ और पास-पड़ोस के लोगों की

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"इन्स्टालमेन्ट" पृ. 85

[2] --"-- वहीं --"-- पृ. 86

अंधश्रध्दा और अज्ञान से लाभ उठाकर उनके सामने धर्म का आडम्बरयुक्त रूप प्रस्तुत करके लाभ उठाने का प्रयत्न करता है। बहू के सर से हत्या का पाप दूर करने के लिए यज्ञ, होमहवन, ब्राम्हणों को भोजन और दान-धर्म करने की आवश्यकता बतलाता है। साथ ही इक्कीस तोले सोने की बिल्ली दान करने के लिए कहता है। पास-पड़ोस के लोग भी अपनी अंधश्रध्दा और अज्ञान के कारण पण्डित की [illegible] हाँ में हा मिलाते हैं। रामू की माँ अपने बहू के सर से पाप का बोझ उतर जाय इसलिए विवशतावश सबकुछ करने के लिए तैयार हो जाती है।

यहाँ कहानीकार ने बिल्ली की हत्या होनेपर प्रायश्चित करने की लोगोंकी अंधश्रध्दायुक्त परम्परा का तथा पण्डित पुरोहितो ने प्रयश्चित जैसी धार्मिक बात को दिया हुआ आड़म्बरयुक्त रूप का यथार्थ चित्रण किया है।

"मोर्चाबन्दी"

इस कहानीका पात्र "संजीवनलाल" है, जिसके खिलाफ कॉलोनी के लोग हो जाते हैं क्यों कि संजीवनलाल कॉलोनी में मुसलमानों को लाकर साम्प्रदायिक दंगा करवाने पर तुला हुआ है। इस संबंध मे कहानी में वर्णित गृहमंत्री के विचार स्वयं लेखक के विचार है। --

"किर्तन और कव्वाली दोनों ही भगवान के गुणगान हैं। उनपर प्रतिबंध नही लगाया जा सकता। लेकिन इस कालोनी में बाहरवाले लोगों के आने से शान्ति भंग हो रही है, इसलिए इन कव्वालों को कालोनी से बाहर कर दिया जाये।" ।1।

लेखक के मत में भिन्न- भिन्न सम्प्रदाय या धर्मके लोगों को एक-दूसरे को धार्मिक बातों में दखलअन्दाजी नहीं करनी चाहिए न ही किसी के धार्मिक भावनोंओ को दुखाना चाहिए। इसमें कहानीकार ने धर्म पण्डितों, पुरोहितों के अज्ञान, उनका चरित्र तथा उनकी अयोग्यता का कच्चा-चिठ्ठा खोल के रख दिया है, साथ ही हिन्दूओं के बेसुरे किर्तन-भजन पर व्यंग कसा है।

कालोनी में सत्यनारायण की कथा पढ़नेवाले चंन्द्रिका महाराज पुरोहित शिवाधार अवस्थी के पुत्र हैं। उन्हें संस्कृत का कच्चा-पक्का ज्ञान हैं। और वे अपने

।1। भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" - पृ. 15।

पिता की परम्परा को आगे चलाते हैं। उनका अधिक परिचय देखिए--

"चन्द्रिका महाराज स्टेट बैंक में चपरासी की सीढ़ियां पार करते हुए जमादार बन गये थे। हेड़ जमादार बनने की जितनी योग्यताएँ होनी चाहिए उनमें सब कानून का अधकचरा ज्ञान, जिद पर अड़ जाना, युनियन के बल पर अपनी मांगे मनवा लेना, जनतन्त्र के इस युग में बड़े-बड़े अफसरों को चुनौती दे देना आदि-आदि।" [1]

सत्यनारायण की कथा समाप्त हो जाने के बाद सामुदायिक आरती, आरंभ हो जाती है। आरती सुनते समय लाल संजीवनसिंह को जो अनुभव होता है उसके वर्णन से कहानीकार ने सामुदायिक आरती के बेसुरेपन पर तीखा व्यंग कसा है।-

"लाल संजीवनसिंह को अनुभव हुआ किवह किसी ऐसे माहोल में आ फंसे हो जहाँ हरेक व्यक्ति चीख रहा था, चाहे वह स्त्री हो, चाहे पुरुष हो। कहीं भैंस रंभा रही थी कहीं कौवा कांव-कांव कर रहा था, कहीं गधा रेंक रहा था, कहीं बकरी मिमिया रही थी। उन्हें लगा कि उनके कान के परदे छिलने लगे हैं और जल्दी ही ये पर्दे फट भी जायेंगे। घबराकर उन्होंने इधर-उधर देखा और फिर घूमकर वह तेजी के साथ वहाँ से भागे।" [2]

धार्मिक बातों का आडम्बर, खोखलाहट और उनके विकृत रूप को चित्रित किया है।

"जाति व्यवस्था"

"हिन्दू जाति व्यवस्था का समूचा आधार आर्थिक शोषण पर ही निर्भर है। हिन्दू समाज एक्सप्लोटेशन की नींव पर कायम है। यह बरहमन, छत्री, वैश्य, शूद्र कितना ऊँच-नीच है, एक मौज करें और दूसरा पिसे।" [3]

भगवतीचरण वर्मा ने अपने उपर्युक्त विचार अपने श्रेष्ठ उपन्यास "भूले-बिसरे चित्र" में व्यक्त किये हैं। हिन्दू जाति व्यवस्था की - एक झलके उनकी एक कहानी में दिखायी देती है।

"दिल का दौरा"

कहानी के पात्र अय्यर की लड़की "चिदम्बरा" बढ़ई के लड़के 'रनबीर' के

---

[1] भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" - पृ.143

[2] --"-- वहीं --"--

[3] डॉ. बैजनाथ प्रसाद शुक्ल- भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना-पृ.278

साथ भाग जाती है और सिविल मैरेज करलेती हैं। चिदम्बरा के पिता अक्षयवरजी के निम्नलिखित कथन से लेखक ने समाज में व्याप्त जात-पात का भेदभाव साथ ही उससे उत्पन्न उच्च-नीचता की ओर संकेत किया है।--

" उस हरामजादी का नाम न लिजिए। उसने रनबीर से सिविल मैरेज कर ली है और बम्बई के किसी अस्पताल में नर्स बन गई है। कुल को कलंकित कर दिया है उस हरामजादी ने, उस बढ़ई के बच्चे के साथ शादी करके।" ।1।

अक्षयवर के उपर्युक्त वक्तव्य पर एक तीसरे व्यक्ति के निम्नांकित कथन से भगवतीबाबू ने वर्तमान समाज की , छुआछूत और वर्णव्यवस्था कीखोकलाहट से हो रही समाज की हानी को स्पष्ट किया है--

" यह जात-पांत, यह छुआ-छूत। भारत वर्ष के पतन के मूल में यही सब हैं। बढ़ई, लुहार, अहीर, नाई, धोबी, चमार सभी भगवान के बनाये हुए प्राणी हैं तो उनमें भेदभाव कैसा? यह सवर्ण हिन्दू लोग, यह पिछड़ी हुई जातियाँ, यह हरिजन, इन खण्डों में विभाजित होकर हिन्दू धर्म नष्ट होता जा रहा है। हम नेहरूजी के आदेशों का उल्लंघन कर रहे हैं। यह जातिवाद का विषधर फिर अपना फन फैलाकर खड़ा हो रहा है।" ।2।

।5। समाज में दिखाई देनेवाली अन्य बातें-

।1। सास-बहू का प्राचीन रूप-

पहले छोटी उम्र में शादी हो जाया करती थी। उस बालिका बधू को घर संभालने में बड़ी दिक्कत हुआ करती थी। बहू के आने से सास सांसारिक कृत्यों से मुक्त होकर पूजा-पाठ किया करती थी। इन बातों का बड़ा ही लुभावना चित्रण "प्रायश्चित्त" कहानी में मिलता है। इस कहानी की नायिका " रामूकी बहू" चौदह साल की बालिका है। घर के सब उसे बहुत प्यार किया करते हैं। देखिए--

---

।1। भगवतीचरण वर्मा -"मोर्चा बन्दी" पृ. 108
।2। --"-- वही --"--

" रामू की बहू दो महिने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आयी थी, पति की प्यारी और सास की दुलारी, चौदह वर्ष की बालिका। भण्डार घर की चाभी उसकी करधनी में लटकने लगी , नौकरोंपर उसका हुक्म चलने लगा, और रामू की बहू घर में सबकुछ। सासजी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया।

"लेकिन ठहरी चौदह वर्ष की बालिका कभी भण्डार घर खुला तो कभी भण्डार घर में बैठे-बैठे सो गई।" [1]

इसमें " रामू की बहू" बालिका वधू के रूपमें सामने आती है।

(ड) माँ- बाप और पत्नी का रूप-

अपनी सन्तानों को समझाने के लिए माता हमेशा शांती से, ममतासे काम लेती है तो पिता अपने पुत्र को डाँट - फटकार सुनाते हैं। पत्नी अपने पति को प्यार से, अनुनय से या आसुओं से मनाने का प्रयत्न करती है। परिवार में दिखाई देनेवाली इन सूक्ष्म बातों का चित्रण "कुंवर साहब मर गये" कहानी में मिलता है।

इस कहानी में काँग्रेस का एक स्वयंसेवक काँग्रेस के जलूस की सूचना पाकर तीन दिन तक बीमार रहने के बावजूद भी माता-पिता औरपत्नी का कहा न मानते हुए काँग्रेस के दप्तर में चला जाता है। वह कहता है-

"पिताजी की डाँट, माताजी की विनय, श्रीमतीजी के आँसू और श्रीमान्जी की अशक्तता मुझे रोक सकने में समर्थ न हो सकी।" [2]

उसके वापस आनेपर उसे देखते ही पिताजी मुँह फेर लेते हैं, माता दो आँसू गिराती है तो पत्नी भगवानपर प्रसाद चढ़ाती है। इसमें पिता की कठोरता, माँ की ममता और पत्नी का प्यार दिखाई देता है।

---

(1) भगवतीचरण वर्मा - "इन्स्टालमेन्ट" पृ. 84
(2) --"-- वही --"-- पृ. 35

(3) पति-पत्नी का रिश्ता -

पति-पत्नी के प्यार-तकरार का अच्छा चित्रण " सौदा हाथ से निकल गया" कहानी में दिखाई देता है। पति-पत्नी के विचारों में हमेशा विचार-भिन्नता दिखाईदेती है। प्रस्तुत कहानी के पति-पत्नी "रायइकबाल शंकर" और 'रघ्दो बीबी' में हमेशा नोंक-झोक होती रहती है। राय इकबाल शंकर नवाब ग्रम्मन की हवेली से हाशिम कबाड़ी से लायी हुई एक पैर टूटी हुई आबनूस की मेज पचीस रूपये में खरिदतें हैं। जब रघ्दो बीबी उस मेज को देखती है तो जलकर खाक हो जाती है। कहती हैं-

"यह दो टाँग की काली-कलूटी मेज। कहाँ से यह कबाड़ उठा लाये? मैं कहती हूँ ज्यों-ज्यों आपकी उम्र बढ़ती जा रही है, त्यों त्यों आपकी अक्ल घटती जा रही है। जहाँ से लाये है वहीं वापस कर आइए। घरमें रूपये नहीं हैं, परसों राशन मँगवाना है।" [1]

रघ्दो बीबी ज्यादा और कुछ न कहे इसलिए वे घर के बाहर निकल पड़ते हैं।

राय इकबाल शंकर रघ्दो बीबी को अपने मित्र जेसुख मीरचन्दानी के आने की खबर सुनाते हैं और उसके भोजन का इन्तजाम करने के लिए कहते हैं। भोजन में शामी, कोरमा, बिरियानी बनाने के लिए भी कहते हैं। यह सब सुनकर रघ्दो बीबी पहले तो झुँझलाकर कहती है,-

" घर में हफ्ते से डालडा नहीं है... भगवान जाने कहाँ गायब हो गया। देहरादूनी चावल भी खतम हो चुका है। और आप न आव देखते हैं न ताव लोगों को न्योत देते हैं।" [2]

पत्नी की इस झुँझलाहट पर ध्यान न देते हुए इकबाल शंकर कहते हैं, मुझे तुमपर पूरा भरोसा है, तुम्ही सब इन्तजाम करना साथ ही पत्नी के रसोई की प्रशंसा भी करते हैं। पति के मुख से अपनी प्रशंसा और उनका भरोसा देखकर रघ्दोबीबी खुश होकर कहती है --

(1) भगवतीचरण वर्मा - "मोर्चाबन्दी" - पृ. 11
(2) --"-- वहीं --"-- पृ. 12

"अच्छा-अच्छा आपको बातें बनानी बहुत आती है। आप सोइए, नहीं तो आपका मिजाज बिगड़ जायेगा।"।1।

यहाँ पति-पत्नी की तकरार में भी प्यार छलकता है। पति की मीठी बातों से पत्नी के दिल में गुदगुदी होती है। अपने उपर पति का भरोसा देखकर वह फूली नहीं समाती। यहाँ एक बात और देखने को मिलती है कि, पत्नी के गुस्से का उसकी तकरार का तथा उसकी कड़वी बातों का पति बुरा नहीं मानता, शांती से काम लेता है। यह बातें हमें अपने पास-पड़ोस में, अपने घर में हमेशा देखने को मिलती है।

।4। सुन्दरता के प्रति मोह -

किसी भी सुन्दर जवान स्त्री की तरफ आकृष्ट होना पुरुष की स्वाभाविक मनोवृत्ति है। किसी सुन्दर स्त्री को अगर पुरुष देखता है तो उसे बार-बार देखने की लालसा उसके मन में पैदा होती है। "रेल में" कहानी में जब सुरेश एक बार कालीशंकर की जवान सुन्दर पत्नी को देखता है, तो उसके उसकी तरफ बार-बार देखने लगता है। कालीशंकर की नाराजी को जानते हुए भी वह उसकी पत्नी की तरफ से अपनी निगाहे नहीं हटा पाता।

"परिचयहिन यात्री" इस कहानी में प्रधान पात्र परिचयहिन यात्री की घूँघट में छिपी पत्नी की ओर बस में सफर कर रहे सब लोग उत्सुकता से देखते हैं। वे सब उसके घूँघट को चीरकर उसका मुख देखना चाहते हैं। क्योंकि उसके गोरे नाजुक हाथ देखकर सब उसके मुख की सुन्दरता देखने के लिए लालायित हैं।

"उपहार देने की प्रथा"-

किसी के दिल में अपनी याद हमेशा बनाये रखने के लिए समाज में दिखाई देनेवाली उपहार देने की परम्परा का जिक्र वर्माजी ने "प्रेजेन्ट्स" कहानी में किया है।

इस कहानी का पात्र देवन्द्र अपनी सोने की अँगूठी की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहता है"-

---

।1। भगवतीचरण वर्मा - "मोर्चाबन्दी" - पृ. 13

" मेरे मित्र शामनाथ ने यह अँगूठी मुझे प्रेजेन्ट की थी उसने कहा था कि, मैं इसे सदा पहिने रहूँ, जिससे कि वह सदा मेरे ध्यान में रहे।" ।1।

"नवयुवक तथा बुजुर्गों की आदतें"-

नवयुवक अपना अधिक समय अपने समवयस्क साथियों में बिताना पसन्द करते हैं। अगर दोस्तों को दावत देनी हो तो सब दोस्त घर की अपेक्षा होटल में ही जाना पसन्द करते हैं। क्योंकि वहाँ खुले आम गप-शप करने की सहुलियत रहती है। बड़े बुजुर्ग लोग घर में जवान लड़कों की बातों में दखलअन्दाजी किये बिना नहीं रह सकते। उन्हें अपनी नसीहतें बार-बार देते रहते हैं। इन सब बातों को कहानीकार ने "एक अनुभव" कहानी में स्पष्ट किया है।

प्रस्तुत कहानी में नरेन्द्र नाम का युवक अपने दोस्तों को दावत देनेवाला है। सब दोस्त घर की अपेक्षा होटल में ... खाना पसन्द करते हैं क्योंकि घर की अपेक्षा होटल में खाना खाने का मजा ही कुछ और होता है, देखिए-

"नवयुवकों की धमाचौकड़ी, एक-दूसरे को गाली गलौज और फिर बहुत गंभीरतापूर्वक अपनी-अपनी प्रेम कहानियाँ - इन सब की गुन्जाइश भले घर में नहीं होती। पहले तो माताएँ, बहिनें, भौजाइयाँ इत्यादि-इत्यादि, दूसरे चश्मा चढ़ाए हुए और दाढ़ी फटकारते हुए बुजुर्गवार जो किसी-न किसी बहाने अपने बरखुरदारन व उनको खराब करने वाले शोहदे दोस्तों की हरकते देखने के लिए कमरे में एक आध बार अवश्य झाँक आते हैं।" ।2।

।6। "वर्तमान युग में रुपयों का बढ़ता महत्व और बदलते नीतिमूल्य"

आधुनिक युग में रुपये का मोल सबसे अधिक दिखाई देता है। रुपये के लिए लोग गालियाँ बदनामी तक सहने के लिए तैयार होते हैं। रुपये के बिना, किसी ने दिल से दिया हुआ आशिर्वाद उन्हें नहीं जचता। इसका चित्रण निम्नलिखित कहानियों में किया है।

।1। भगवतीचरण वर्मा - इन्स्टालमेन्ट" पृ. 5
।2। --"-- वही --"- पृ. 43

"वसीयत"

यह कहानी 1970 के बाद लिखी कहानियों में से एक है। इसमें वर्माजी ने वर्तमान समाज में मानव की बदलती हुई मनोवृत्ति को, स्वार्थपरता को "चूड़ामणि" की वसीयतद्वारा उजागर किया है।

कहानी के पात्र" चूड़ामणि" ने मृत्युपूर्व वसीयत तैयार कर रखी है और उसके कार्यान्वयन का भार अपने निकटस्थ "श्री जनार्दन जोशी" को सौंप दिया है। उनकी मृत्यु हो जानेपर जोशी वसीयत का कार्यान्वयन करते हैं। वसीयत में "चूड़ामणि ने अपने जायदाद के बटवारे के साथ अपने बेटे, बेटियाँ, दामाद, पत्नी सब के कच्चे चिठ्ठे खोल के रख दिये हैं। उनका कमीनापन, बुरी आदतें वसीयत-द्वारा सबपर जाहीर होजाने पर उन में से हर एक आग बबुला हो जाता है। और"चूड़ामणि को गालियाँ देता हैं। गालियाँ देते वक्त वह अपने और चूड़ामणि के रिश्ते का भी लिहाज नहीं करता। लेकिन वसीयत के अगले अंश से जब पता चलता है कि उन्होंने उनके कच्चे चिठ्ठे खोलने के बावजूद उनके लिए बहुत सारा धन भी छोड़ा है तो उनमें से हर एक उनपर तारीफ के फूल बरसाता है तथा उनके बड़प्पन की सराहना करता है। रुपयों की खातिर "चूड़ामणि ने दी हुई गालियाँ तथा सबके सामने उनका हुआ अपमान उन्हें सहर्ष स्वीकार है।

"चूड़ामणि" ने अपनी दूसरी बेटी और दामाद को सिर्फ आशिर्वाद दिये हैं तथा उनके कारोबर, स्वभाव की सराहना की है। उनके लिए कुछ भी धन नहीं छोड़ा है। यह सुनकर बेटी रोने लगती है और अपने पिता के बारे में अनुदगार भी निकालती है। आँवर्तमान समाज की अर्थलिप्सा के दर्शन होते हैं। आज के युवक-युवतियों को बड़ों के प्यार आशिर्वाद का मूल्य रुपयों से बढ़कर नहीं है।

"चूड़ामणि" ने अपनी वसीयतमें अपनी बड़ी बहू नीरजा को उनके मरणो-परान्त छह महिने तक सुबह स्नान करके अपने हाथोंसे रसोई बनाकर गैरह ब्राह्मणों को खिलाने की आज्ञा की है। अपने ससुर की आज्ञा का पालन करने के बजाय वह तुरन्त कहती है कि -

" जाड़े में सुबह स्नान करके रसोई बनाये मेरी बला। बूढ़े की सनक पर मैं अपनी जान नहीं दे सकती।" ॥1॥

॥1॥ भगवतीचरण वर्मा - "मोर्चा बन्दी" पृ.62

अगले अंश से जब पता चलता है कि इस काम के लिए "चूड़ामणि" ने पचीस हजार रु. की रकम निश्चित की है तो दोनों बहुएँ यह काम करने के लिए तैयार हो जाती हैं। अब ससुरजी का आदेश उनके लिए वेदवाक्य बन जाता है।

अत: इस कहानी में वर्माजी ने वर्तमान समाज में दिखाई देनेवाली अर्थलिप्सा, लुप्त होती जा रही मान-मर्यादा को स्पष्ट किया है। साथ ही यह भी दिखाया है कि आज की दुनिया में पति-पत्नी, बाप-बेटा, बाप-बेटी, ससुर-बहू, ससुर-दामाद, मामा-भाँजा, सभी का रिश्ता रुपयों से बनता और बिगड़ता है। हर चीज को, हर बात को रुपये की तौल में तोला जाता है। वर्तमान युग में इन्सान की बदलती मनोवृत्ति, गिरते नीति-मूल्यों के दर्शन इसमें होते हैं।

"गनेसीलाल का रामराज"

1970 के बाद लिखी गयी इस कहानी में इन्सान की कृतघ्नता और स्वार्थपरता को उजागर किया है। वर्तमान समाज में आदमी को आदमी का लिहाज नहीं रह गया है। अपनी स्वार्थसिध्दी के लिए वह अपने उपकारकर्ता कोभी लूटने से या बर्बाद करने से नहीं रुकता।

प्रस्तुत कहानी का नायक"गनेसीलाल" ने वकालत पास की है। वह अब-तक बेकार है। उसकी यह दयनीय हालत देखकर "शंखनाद"पत्र के सम्पादक "त्यागीजी" उसे अपने पत्र का प्रमुख संवाददाता बना देते हैं। कुछ ही दिनों में गनेसीलाल त्यागीजी के अहसानों को भूलाकर "शंखनाद" का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करने लगता है।

उसकी स्वार्थपरता, चालबाजी और अक्लमंदी देखने योग्य है। लखनऊ में नरही मेंरहनेवाले 'ख्वाजा अब्दुल मजीद' अपना सामान बेचकर और अपनी नरहीवाली हवेली को ताला लगाकर एक दिन अचानक अपनी इकलौती बेटी और दामाद के पास पाकिस्तान चले जाते हैं। बाद में खबर आती है कि, वहीं उनका देहान्त हो गया। यह खबर पानेपर गनेसीलाल तुरन्त उनकी हवेली का ताला तोड़कर उसपर अपना कब्जा कर लेता है। छ: महिने बाद जब सरकार सचेत हो जाती है तब गनेसीलाल प्रॉपर्टी के ऐसे कागजात प्रस्तुत करता है कि उसे अस्वीकार करनेवाला कोई सामने नहीं आता। मामला मन्त्रियों तक जाता है और अन्त में गनेसीलाल को उस हवेली का मालिक घोषित किया जाता है।

उस हवेली में गनेसीलाल इक्का-तांगा-युनियन का दफ्तर खोलता है। उस युनियन का वह प्रेसिडेन्ट बनता है। शंखनाद का प्रमुख संवाद दाता होने के कारण उसमें इक्का-तांगा-युनियन को लेकर पुलिस के खिलाफ कई समाचार निकालता है।

अल्पावधी में गृहमंत्री का विशेष सलाहकार, लेबर लिडर बन जाने के कारण प्रभावशाली व्यक्ति माना जाने लगता है। त्यागीजी को जब उसकी करतूत मालूम हो जाती है तब वे उसे शंखनाद से निकाल देते हैं।

अपनी चालाकी, मक्कारी के कारण वह कांग्रेस का बहुत बड़ा नेता बन जाता है। त्यागीजी का 'शंखनाद' पत्र बहुत घाटे में चलते-चलते आखिर बन्द हो जाता है। अब गनेसीलाल "रामराज" नाम का पत्र निकालनेवाला है और अपनी रामराजकी कल्पना पर वह मिनिस्टर बननेवाला है।

"गुन न हिरानो, गुन गाहक हिरानो है"

कहानी में लेखक ने बताया है कि पहले राजे, महाराजें, रियासतों के काल में सदाशिव यशवंत सेने जैसे गुणवान लोगोंकी कदर की जाती थी। लेकिन आज के समाज में यह बात नहीं दिखाई देती।

प्रस्तुत कहानी में मुखयमंत्री, नत्थुलाल जैसे स्वार्थी आदमीपर भरोसा कर के " रत्नकुमार" जैसे ठेठ, निःस्वार्थी सीधे आदमीसे मिलना, बातें करना छोड़ देते हैं। लफंगा नत्थुलाल रत्नकुमार को एक सधा हुआ गुण्डा करार देता है और मुखयमंत्री इसे मान लेते हैं।

उपर्युक्त कहानियों में वर्माजी ने यही दिखाया है कि वर्तमान समाज बेईमान लोगोंका समाज बनता जा रहा है।